

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

(હિસ્સા : 02)

# ઈસ્લાહે આ'માલ और पावरफुल दुआओं



-: મુઅલ્લિફ :-

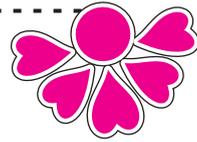
ડાજી ઈબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા  
સદર મોહસિને આઝમ મિશન  
સેન્ટ્રલ કમિટી

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ



(हिस्सा-2)

घस्वाहे आ'भाव  
और  
पावरहुव दुआये



मुअद्लिइ

डाज्ठ ईब्राहीम भाई वडीयावाला

प्रेसिडेन्ट : मोडसिने आजम मिशन डेड ओईस

अडमदाबाद, मो. ८६ २४ २२ १२ १२

જુમ્લા હુકૂ બ હકકે મોહસિને આઝમ મિશન મહફૂઝ હૈ.

કિતાબ : ઈસ્લાહે આ'માલ ઓર પાવરફુલ દુઆએ

મુઅલ્લિફ : હાજી ઈબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા (અહમદાબાદ)

પુફ રીડીંગ વ ઝેરે નિગરાં :

હાજી ઈબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા (અહમદાબાદ)

ટાઈપ-સેટીંગ : જનાબ તૌફીક અહમદ અશરફી (બળૌદા)

M : 9033168086, 7383761217

તા'દાદ : 5000

કીમત : બિલા હદિયા (દુઆએ ખેર)

સિને ઈશાઅત : જાન્યુઆરી-2024

નાશિર : મોહસિને આઝમ મિશન હેડ ઓફિસ 2/B કીર્તિકુંજ

સોસાયટી શાહે આલમ ટોલનાકા અહમદાબાદ-380028

-: મિલને કા પતા :-

મક્તબએ શૈખુલ ઈસ્લામ, અલિફ કિરાના કે સામને,

રસૂલાબાદ, શાહે આલમ અહમદાબાદ-380028

ઓર મોહસિને આઝમ મિશન કી તમામ બ્રાન્ચેં

કોન્ટેક્ટ : 9624221212



## મોહસિને આઝમ મિશન કી ખિદમત



મોહસિને આઝમ મિશન કી જાનિબ સે યેહ કિતાબ પાવરકુલ દુઆએ ઓર ઇસ્લાહે આ'માલ આપ કી ખિદમત મેં પેશ કરતે હુવે બળી ખુશી મહસૂસ હો રહી હેં મિશન કી જાનિબ સે અન્દાઝન આજ તક તીન લાખ સે ઝિયાદા કિતાબ દીની મા'લૂમાત કી છપવા કર ફી મેં તક્સીમ હો ચુકી હેં ઓર યેહ કિતાબ ભી અલ્લાહ પાક કે કરમ સે ગુજરાતી ઓર ઉર્દૂ દો લેંગવેઝ મેં છાપી ગઈ હેં હમ ઇસ કારે ખૈર મેં હિસ્સા લે કર મદદ કરને વાલોં કે ઓર હોસલા અફઝાઈ કરને વાલોં કે શુક ગુઝાર હેં **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** મિશન કી જાનિબ સે અન્કરીબ એક કિતાબ “હમ કિસ કી માને પીર કી યા રસૂલ કી” શાએઅ હો રહી હૈ મૌલા તઆલા ખિદમત કો કબૂલ ફરમાએ. આમીન ઓર અન્કરીબ ઇસ કિતાબ કો ઉર્દૂ મેં ભી શાએઅ કિયા જાએગા. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**



## ✿ ईहरिस्त ✿

नम्बर शुमार	उन्वान	सईडा नम्बर
1	अल्लाह पाक इरमाता है : मुज से मांगो	6
2	दुआ कैसे मांगे और क्या मांगे ?	7
3	अल्लाह पाक दुआओं कबूल इरमाता है	9
4	अल्लाह के सिवा कोई अता करने वाला नहीं और मन्अ करने वाला नहीं	10
5	मुसीबत क्यूं आती है ? और कैसे दूर हो	10
6	जब तक खुदा न याहे	12
7	अगर अल्लाह तुजे कोई तकलीफ दे	13
8	औलियाअल्लाह का अता करना कैसा ?	14
9	वसीला ज़ाँज भी है और ज़री भी है	16
10	हुज़ूर के पहले भी हुज़ूर के वसीले से दुआ	17
11	वसीला अल्लाह का हुकम और सहाबा का तरीका है	18
12	हम दुआ किस तरह करे ?	19
13	सिई हलाल जाओ	20
14	हराम मत जाओ	22
15	ने'मतें कैसे मिले ? कैसे बढे ? तौबा करने से ने'मत बढती है	25
16	शुक करने से ने'मत बढती है	26
17	सअ्र करने से ने'मतें बढती हैं	27

18	साबिरों को भरपूर अज	28
19	अल्लाह से उरने वालों के लिये ने'मत है	28
20	माल के आने पर ठतराना और माल के यले जाने पर रोना धोना	30
21	माल के नुक्सान	32
22	रिजुक का बयान	33
23	हम पर मुसीबतें क्यूं आती हैं ? दुआओं क्यूं कबूल नहीं होती	34
24	काकिरों को दोस्त न बनाओ	35
25	हया के बाब में	37
26	वजून में योरी और माल में मिलावट	40
27	सूद खाना / हराम खाना	42
28	जकात / उशर न निकालना	44
29	पुद पसन्दी वाले	46
30	किसी पर बोहतान लगाना	48
31	वारसाई में लणकियों का हक न देना	49
32	बय्यों की ता'लीम, स्कूल की पढाई और तर्बियत	50
33	मजाराते औलिया और फादिम हजरात	52
34	बनावटी पीर, मुकर्रिर और नात'प्वां	54
35	पावर कुल दुआ	57
36	किरिशतों की दुआओं मोमिनों के लिये	62
37	अम्बियाअे किराम की मुप्तलिङ्ग दुआओं	66

## 1) अल्लाह पाक इरमाता है मुझ से मांगों में अता कइंगा

अल्लाह का शुक्र है के उस ने हमें मोमिन बनाया मोमिन सिर्फ अल्लाह तआला से उरता है और अपनी तमाम जरूरतों के लिये सिर्फ अल्लाह पाक से ही सुवाल करता है. इमान नाम ही इस यीज का है के भौड़ भी उस से हो और उम्मीद भी उसी से हो और हम को ता'लीम भी येह दी गई है. जैसा के अल्लाह तबारक व तआला अपने पाकीजा कलाम कुरआने करीम पारह 2 सूरअे भकरह आयत नं. 186 में इरमाता है :

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۗ  
فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾

**तर्जमा :** अै मडभूभ ! जब मेरे बन्दे तुम से मेरे बारे में पूछें तो कडो के में करीब हूं वोड जब मुजे पुकारे तो में उन की दुआ कबूल करता हूं तो मेरे बन्दों को याडिये के मेरा हुकम मानें और मुज पर इमान लाअें के वोड राह पाअें.

आदमी को याडिये के अपनी तमाम हाजत सिर्फ उसी से तलभ करे और यकीन के साथ दुआ करे कभी हाजत पूरी होने में तापीर हो झौरन कबूल न हो तब भी जभान पर शिकवा शिकायत न लाअे कभी बन्दे में इप्लास की कमी होती है इस लिये अल्लाह के नेक बन्दों से दुआ कराई जाती है : हम सुन्नियों का मजाराते औलिया पर हाजिर हो कर दुआअें कराना और उन मकबूले बारगाह के वसीले से दुआ मांगना झईटे मन्द होता है.

कभी दुआ झौरन कबूल हो जाती है कभी किसी हिकमत की वजह से दुआ कबूल होने में तापीर होती है अैसे वक्त में जभान

पर शिकवा न लाओ कभी हमारी दुआओं को आभिरत के लिये ज़मीरा बना दी जाती है याद रहे के हर हाल में हमारा हाजत रवाँ करने वाला सिर्फ़ अल्लाह पाक है सिर्फ़ उसी से माँगे और कबूलियत के यकीन के साथ माँगे.

## ﴿2﴾ दुआ कैसे माँगे और क्या माँगे ?

अल्लाह तबारक व तआला पारह 8 सूरेओ आ'राफ़ आयत नं. 55-56 में इरमाता है :

أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۖ وَلَا تَقْسِدُوا فِي الْأَرْضِ  
بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَاعْوَهُ حَوْقًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَةَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

**तर्जमा :** अपने रब से दुआ करो गिणगिणाते और आडिस्ता (धीमी अवाज़ में) बेशक ! उद से बढने वाले उसे पसन्द नहीं और जमीन के संवरने के बा'द उस पर इसाद न कैलाओ और उस से दुआ करो उम्मीद के साथ. बेशक ! अल्लाह पाक की रहमत नेक लोगों के करीब है.

उदीस शरीफ़ में है : “**अद-दुआउ मुफ़्भुल धबादति**”  
दुआ बेहतरीन धबादत है दुआ अल्लाह तआला से हाजत तलब करने को कहते हैं और याद रहे हम जिस से सुवाल करते हैं वोह हम से दूर नहीं जैसा के हम से कहा गया **नहनु अकरभु धलयडि**  
**मिन डब्बिल वरीद** (पारह 26 सूरेओ कोइ आयत नं. 16) और येह ली कहा गया **वहुव मअकुम औनमा कुन्तुम** (पारह 27 सूरेओ उदीद आयत नं.4) या'नी हमारा रब हम से करीब है और सब कुछ सुनता जानता है हमारा रब समीअ और बसीर है इसी लिये कहा गया दुआ आडिस्ता (धीमी आवाज़ से) माँगे याद रहे

हम किसी बे जबर को नहीं पुकारते है धीमे और दर के साथ और उम्मीद के साथ दुआ मांगे.

हसन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का कौल है : आहिस्ता दुआ करना येह अे'लानिया दुआ करने से सत्तर (70) दरजे अइजल है. ईस पर से हमारे वाअेजीन हजरात कुछ सभक हासिल करे जो माईक हाथ में ले कर यिल्ला यिल्ला कर और जुलन्द आवाज में यीज यीज कर दुआ करते हैं जैसे कोई बेहरे को सुना रहे हो और रियाकारी करते है.

दुआ के आदाज में से येह भी है के हुजूरे कलब के साथ कबूलियत के यकीन के साथ दुआ की जाअे, आवाज जुलन्द न हो और किसी नाजाईज अत्र के लिये दुआ न की जाअे.

अल्लाह तबारक व तआला हमारा तुम्हारा और तमाम मज्लूक के रिज़्क का कइल है और वोह किसी जंगली जानवर किसी दरियाई जानवर किसी परिन्दे ने यहां तक के कीणे मकोणे को भी नहीं भूलता वोह हमें कैसे भूलेगा ?

जैसा के पारह 12 सूरअे हूद आयत नं. 6 में इरमाता है :

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۗ

كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝

तर्जमा : जमीन पर चलने वाला कोई जानदार अैसा नहीं

जिस का रिज़्क अल्लाह के जिम्मअे करम पर न हो.

तो हमारा यकीन कामिल होना याहिये के हमारा रज हम को रिज़्क देता है और वोह हमारे लिये काई है.

### 3) अल्लाह दुआओं कबूल इरमाता है

अल्लाह तबारक व तआला पारह 24 सूरअे मुअमिन आयत नं. 60 में इरमाता है :

**وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ط**

**तर्जमा :** और तुम्हारे रब ने इरमाया मुज से दुआ करो मैं कबूल करूंगा.

अल्लाह तबारक व तआला अपनी रहमत से अपने बन्दों की दुआओं कबूल इरमाता है और दुआ की कबूलियत के लिये कुछ शर्तें है.

अेक तो दुआ में ईप्वास जरूरी है और वक्ते दुआ दिल् की हुजूरी भी जरूरी है या'नी कल्ब गैर के साथ भशूल न हो, तीसरा येह के किसी नाजाईज चीज की डीमान्ड न हो, चौथा येह है के अल्लाह तआला की रहमत पर यकीन हो और येह भी के जभान पर शिकवा शिकायत न लाअे.

कबूलियत के भी कुछ अलग अलग अन्दाज है या तो तुम्हारी मुराद इौरन दुन्या ही में दी जाती है या तो आभिरत में तुम्हारे लिये जभीरा बना दिया जाता है या इर तुम्हारा दुआ मांगना तुम्हारे गुनाहों का कइफारा बना दिया जाता है.

जो दुआओं दुन्या में कबूल नहीं होती उस का अज रोजे कियामत मैदाने महशर में अता होगा और येह भी याद रहे के अपने अमल का बदला न मांगे मगर अल्लाह पाक से उस का इजूल मांगे. हम कोई मजदूर नहीं के अपने अमल की मजदूरी

मांगे हम उस के बन्दे है बन्दगी तो उस का हक है हम उस का  
 इज्जल और करम मांगे तो हम बेहतर पाओगे. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

﴿4﴾ **अल्लाह के सिवा कोय अता करने वाला नहीं  
 और कोय मन्थ करने वाला नहीं**

अल्लाह तबारक व तआला कुरआने मज्द पारह 1  
 सूराओ बकरह आयत नं. 107 में इरमाता है :

**وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝**

**तर्जमा :** और अल्लाह के सिवा कोय भी तुम्हारा  
 हिमायती या मददगार नहीं है.

जमीन और आस्मान की तमाम मज्लूक का जालिक  
 मालिक और राजिक वोही है तमाम जैर और शर का पैदा इरमाने  
 वाला भी सिर्फ वोही अेक है बाकी तमाम जो है वोह मज्जज है उस  
 के बन्दे और मज्लूक है.

अैसी सुरत में बन्दों को बन्दों की तरफ से कुछ मदद  
 मिलती है तो वोह भी सिर्फ मज्जज है हकीकी मददगार व मोर्धन  
 सिर्फ वोही है बाकी सब जरीआ है. मुअस्सिरे हकीकी और फाँले  
 हकीकी सिर्फ वोही है इस लिये बन्दे को सिर्फ उसी पर भरोसा  
 और उसी पर यकीन और तवक्कुल याहिये.

﴿5﴾ **मुसीबत क्यूं आती है ? और कैसे दूर हो ?**

अल्लाह तबारक व तआला पारह 7 सूराओ अन्आम  
 आयत नं. 17 में इरमाता है :

**وَإِنْ يَسْأَلْكَ اللَّهُ بَضْرًا فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يَسْأَلْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَى**

**كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝**

**તર્જમા :** ઓર અગર અલ્લાહ તુજે કોઈ બુરાઈ પહુંચાએ તો ઉસ કે સિવા ઉસ બુરાઈ કો દૂર કરને વાલા કોઈ નહીં ઓર અગર વોહ તુજે કોઈ ભલાઈ પહુંચાએ તો વોહ સબ કુછ કર સકતા હૈ.

એક ખાત તો યેહ સમઝ લેના ચાહિયે કે કોઈ બીમારી યા બલા યા કસોટી તંગ દસ્તી યા ગરીબી જો કુછ ભી હોતા હૈ વોહ સબ અલ્લાહ કી મરઝી સે હોતા હૈ ઓર યેહ કે અલ્લાહ કિસી પર ઝુલ્મ નહીં કરતા **હમારા રબ ઝુલ્મ વ જહાલત સે પાક હૈ** વોહ જો ભી કરતા હૈ વોહ ફઝ્લ હૈ યા અદ્લ હૈ ઓર એન હિક્મત હૈ.

અબ અગર અલ્લાહ હમેં તક્લીફ દેના ચાહે તો **વોહ કૌન હૈ કે ઉસ કી મરઝી કે ખિલાફ કર સકે ? વોહ કૌન હૈ કે ઉસ કી મરઝી કે ખિલાફ તક્લીફ દૂર કર સકે ?** અગર મુસીબત ખુદા દેતા હૈ તો રાહત ભી સિફ વોહી દે સકતા હૈ હમારી તક્લીફ યા તો હમારે ગુનાહ કી સઝા હૈ ઓર યેહ ગુનાહ કી સઝા હૈ તો યેહ ઇન્આમ હૈ કે ગુનાહ કા કફફારા બન જાએ યા સબ્ર કરને પર યેહ હમારે દરજાત બુલન્દ કરતા હૈ ઓર વોહ ચાહે તો હમ પર ઇન્આમ કરે. ઉસ કો રોકને વાલા કોઈ નહીં જૈસા કે અલ્લાહ તઆલા સૂરએ નિસા આયત નં. 79 મેં ફરમાતા હૈ :

**مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَفْسِكَ ط**

**તર્જમા :** તુજે જો ભી ભલાઈ પહુંચી વોહ અલ્લાહ તઆલા કી તરફ સે હૈ ઓર જો બુરાઈ પહુંચી વોહ તેરી તરફ સે હૈ.

યા'ની તુજે જો ફઝ્લ પહુંચા જૈસે તન્દુરુસ્તી રિઝ્ક યા ને'મતેં પહુંચી વોહ સિફ ફઝ્લે બારી તઆલા હૈ ઓર જો બલાએં

मुसीबतें मिली वोह तेरे नफ़स की तरफ़ से हैं उस को दूर करने के लिये उसी की पनाह में जाना चाहिये.

### ﴿6﴾ जब तक पुढा न याहे

अल्लाह पाक पारह 9 सूराअे अन्फ़ाल आयत नं. 24 में ईशाद़ि इरमाता है :

**وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ**

**तर्जमा :** और जान लो के अल्लाह का हुक्म आदमी और उस के दिली इरादों में लाईल हो जाता है.

या'नी पूरी दुन्या अगर तुम्हारी दुश्मन बन जाअे और तुम्हारा बुरा करना याहे तो उस के याहने से कुछ होने वाला नहीं और येह तुम्हारा भला करना याहे तो बिगैर अल्लाह के याहे तुम्हें कोई इआेदा नहीं होने वाला हां सिवाअे येह के बन्दा भी याहे और अल्लाह भी याहे तो बात अलग है.

हम अगर मदद तलब करे तो सिर्फ़ अल्लाह से ही मदद तलब करे, उस के सिवा कोई हमारे नफ़अ या नुकसान का मालिक नहीं, अगर सारी उम्मत तमाम बन्दे तुजे कोई इआेदा पहुंयाना याहे तो वोह तुम्हें ईतना ही इआेदा पहुंया सकते हैं जितना हमारा रब याहे और अगर वोह तमाम के तमाम तुजे नुकसान पहुंयाना याहे तो वोह तुजे वोही नुकसान पहुंया सकते हैं जो तेरे रब ने लिखा है. तेरा इआेदा तेरा नुकसान सब उसी के दस्ते कुदरत में है अगर बन्दे से कुछ मांगो तब भी उसे मजाज समज कर मांगो सिर्फ़ उसी से डरो मप्लूक से नहीं डकीकी मुस्तआन (मददगार) सिर्फ़ वोही है.

## ﴿7﴾ ਅਗਰ ਅਲਲਾਹ ਤੁਯੇ ਕੋਓ ਤਕਵੀਫ਼ ਏ

ਅਲਲਾਹ ਤਭਾਰਕ ਵ ਤਆਲਾ ਕੁਰਆਨੇ ਕਰੀਮ ਪਾਰਲ 11 ਸੂਰਓ ਯੂਨੁਸ ਆਯਤ ਨੰ. 107 ਮੇਂ ਈਸ਼ਾਦਿ ਫ਼ਰਮਾਤਾ ਹੈ :

وَإِنْ يَسْأَلْكَ اللَّهُ بَعْضُ فَلَكَ كَاشِفٌ لَئِذَا هُوَ وَإِنْ يُدْرِكَ بِحَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ ۗ

**ਤਰਜਮਾ :** ਅਗਰ ਅਲਲਾਹ ਤੁਯੇ ਕੋਓ ਤਕਵੀਫ਼ ਪਹੁੰਚਾਓ ਤੋ ਉਸ ਕੇ ਸਿਵਾ ਕੋਓ ਦੂਰ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਤਾ ਓਰ ਅਗਰ ਵੋਲ ਤੇਰਾ ਕੁਓ ਭਲਾ ਯਾਏ ਤੋ ਉਸ ਕੇ ਫ਼ਤ੍ਹਲ ਕੋ ਰਏ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਕੋਓ ਨਹੀਂ.

ਨਫ਼ਅ ਓਰ ਨੁਕਸਾਨ ਕਾ ਮਾਲਿਕ ਸਿਫ਼ ਅਲਲਾਹ ਵਾਲਿਦ ਹੈ ਵੋਢੀ ਓਰ ਸਿਫ਼ ਵੋਢੀ ਕਾਦਿਰ ਮੁਘ਼ਤਾਰੇ ਕੁਲ, ਢਕੀਕੀ ਰਭ ਹੈ ਭਾਕੀ ਸਭ ਜੋ ਠੇਂ ਵੋਲ ਮਜ਼ਾਝ ਹੈ ਉਸੀ ਕੇ ਭਨਦੇ ਹੈ ਉਸ ਕੇ ਸਿਵਾ ਕੋਓ ਕੁਓ ਅਤਾ ਭੀ ਕਰਤੇ ਹੈ ਤੋ ਵੋਲ ਅਲਲਾਹ ਕੀ ਮਰਝੀ ਹੈ. ਢਮ ਜੈਸੇ ਓਲਿਯਾਅਲਲਾਹ ਕੇ ਮਝਾਰਾਤ ਪਰ ਜਾਤੇ ਹੈ ਓਰ ਭੁਝੁਗੋਂ ਸੇ ਸੁਵਾਲ ਕਰਤੇ ਹੈ ਤਭ ਭੀ ਢਮਾਰਾ ਅਕੀਦਾ ਓਰ ਢਮਾਰੇ ਆ'ਮਾਲ ਐਸੇ ਢੋ ਕੇ ਐ ਪਾਕ ਪਰਵਰ ਢਿਗਾਰ ! ਈਨ ਨੇਕ ਭਨਦੋਂ ਕੇ ਵਸੀਲੇ ਸੇ ਤੂ ਢਮੇਂ ਅਤਾ ਕਰ ਓਰ ਅਗਰ ਢਮਾਰਾ ਰਭ ਨ ਯਾਏ ਤੋ ਕੋਓ ਵਲਿਯੁਲਲਾਹ ਭੀ ਢਮੇਂ ਕੁਓ ਅਤਾ ਨਹੀਂ ਕਰੇਂਗੇ.

ਈਨਸਾਨ ਕੀ ਕਿਸਮਤ ਜਭ ਭਨਦਾ ਮਾਂ ਕੇ ਪੇਟ ਮੇਂ ਥਾ ਤਭ ਲਿਭ ਯੁਕੀ ਹੈ ਅਲਲਾਹ ਨੇ ਕਲਮ ਕੇ ਝਰੀਓ ਜੋ ਲਿਭਾ ਵੋਲ ਫ਼ਾਈਨਲ ਹੈ ਭਨਦੇ ਕੇ ਵਸੀਲੇ ਸੇ ਜੋ ਫ਼ਾਏਦਾ ਪਹੁੰਚਤਾ ਹੈ ਵੋਲ ਭੀ ਮਸ਼ਿਯਤੇ ਈਲਾਢੀ ਕੇ ਤਾਭੇਅ ਹੈ ਭਨਦੇ ਕੋ ਯਾਲਿਯੇ ਕੇ ਵੋਲ ਰਭ ਕੇ ਫ਼ੈਸਲੇ ਪਰ ਰਾਝੀ ਰਏ.

ਤਮਾਮ ਭਨਦੇ ਅਲਲਾਹ ਪਾਕ ਕੇ ਫ਼ੈਸਲੇ ਕੇ ਆਗੇ ਮਝਭੂਰ ਹੈ ਸਿਵਾਓ ਅਲਲਾਹ ਕੇ ਖ਼ਾਸ ਭਨਦੇ ਜੈਸੇ ਅਭਿਭਯਾ, ਓਲਿਯਾ ਯੇਲ

अल्लाह के मलबूब है मगर मलबूब भी आभिर तो बन्दे है इर्क  
 एतना है हम मोहताज और मजबूर बन्दे हैं और वोह  
 अम्बिया, सिद्दीक शौहदा, औलिया येह मलबूब बन्दे है और  
 वोह अल्लाह से मलबूबत करते हैं और अल्लाह पाक उन से  
 मलबूबत करता है उन से दुआओं लेनी याहिये मगर याद रहे  
 जैसा के अल्लाह तआला सूरे अहद आयत नं. 56 में इरमाता है :

مَنْ دَابَّ إِلَّا هُوَ أَخَذَ بِنَاصِيَتِهِ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

**तर्जमा :** जमीन पर चलने वाले बन्दों में से कोई ऐसा  
 नहीं जिस की थोटी अल्लाह तआला के कब्जअे कुदरत में न हो।

बिगैर भुदा के याहे न कोई इअेदा पहुँचा सकता है न  
 नुकसान.

### 8) औलिया अल्लाह का अता करना

मुसलमानों का ही अेक गुमराह इर्का है जिन को आज की  
 सउीदी हुकूमत से मद्द मिलती है वोह लोग अल्लाह के सिवा की  
 मद्द मांगने को शिर्क, कुफ़, गुमराही के इत्वे देते है डालांके  
 अल्लाह के गैर की इबादत शिर्क है मद्द शिर्क नहीं है.

अल्लाह तआला ने हम को इस बात से रोका है के किसी  
 की इबादत हम नहीं कर सकते, मगर सुवाल करना ज़रूर है  
 और येह कुरआनो उदीस से भी साबित है जैसा के :

अल्लाह तआला कुरआने करीम पारह 5 सूरे अिसा  
 आयत नं. 75 में इरमाता है :

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَوْلِيَاءُ ۖ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۗ  
 وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ۗ

**तर्जमा :** अै अल्लाह ! हमें ँस बस्ती से निकाल जिस के रहने वाले जालिम हैं और हमें अपने पास से कोँ छिमायती दे दे और हमें अपने पास से कोँ मददगार दे दे.

येह दुआ मक्का के मुसीबत ज्दा मुसलमानों ने मांगी और अल्लाह तआला ने अपने हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को उन लोगों का मददगार बनाया.

और अल्लाह पाक पारह 6 सूराओ माँदह आयत नं. 2 में इरमाता है :

**وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۗ**

**तर्जमा :** और नेकी और परहेजगारी में ओक दूसरे की मदद करो और गुनाह और जियादती पर आपस में ओक दूसरे की मदद न करो.

अब अगर बन्दों से मदद न लेना या न देना हो तो अल्लाह पाक ओसा हुकम क्यूं करता ? और तबरानी में ओक हदीस मौजूद हैं के नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : अगर तुम जंगल में कहीं रस्ता भूल जाओ तो पुकारो “या ईबादल्लाह अयनूनी” यानी अै अल्लाह के बन्दों मेरी मदद करो.

अब सोचो के जहां कोँ मौजूद नहीं वहां आप किस को पुकारते हो ? और येह भी “या” कह कर साबित हुवा “या” से निदा करना कुँ नहीं और मदद मांगना गुनाह नहीं वैसे भी आदमी कब्रिस्तान जाओ तब भी पुकारता है : **अस्सलामु अलयकुम या अहलल कुभूरि अन्तुम सलकुना व नहनु बिल**

**असरि.** यहाँ भी भरे हुवे को “या” से पुकारा गया साबित हुआ वहाबिया और अहले उदीस जूटे है.

### ⑨ वसीला जघर है और मर्री ली है

मुसलमानों ही का कोई एक दो झिर्के जैसे वहाबी अहले उदीस और सउदी हुकूमत के कुछ वझादार वसीले को शिर्क कहते है और कुरआन क्या कहता है :

जब उजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से जन्नत में कुछ एजतेहादी भता हुँ और अल्लाह तआला ने सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام को दुन्या में त्मेज दिया तो अबुल बशर हमारे आका उजरते आदम कई साल तक रोते रहे बिल आभिर आप ने हमारे आका सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के वसीले से दुआ मांगी जो कबूल हुँ और उजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा कबूल हुँ. इस का जिक्र अल्लाह रब्बुल एज्जल ने इस तरह किया है : पारह 1 अल बकरह आयत नं. 37 में एशार्ह हुआ :

**فَتَلَقَىٰ آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۗ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝**

**तर्जमा :** झिर सीध लिये उजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने रब से कुछ कलिमे तो अल्लाह ने उस की तौबा कबूल इरमाँ.

वोह कलिमे क्या थे ? आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी दुआ में रब्बना जलमना (पुरी आयत) के साथ येह अर्ज किया :

**“अल्लाहुम्म एन्नी अस्अलुक बिजाहि मुहम्मद अब्दुक व करामतहु अलैक व अन्तगफिरली भतीअती”** या'नी या रब ! मैं तुज से तेरे बन्दे आस मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़ाओ मर्तभत के तुझैल में और उस करामत (कुर्ब) के सदके में ज़े

उन्हें तेरे दरबार में छसिल हैं उस के सदके तुज से मगझरत याहता हूँ.

और येह दुआ मांगना था के अल्लाह रब्बुल ईज्जत व उलाने हजरत की दुआ कबूल इरमाई और तौबा कबूल हुई जभ तमाम ईन्सानों के बाप अबुल बशर से दुआ के वक्त वसीला मांगना साबित है तो अब लोग क्यूँ ईन्कार करते हैं ?

हमें भी अल्लाह तआला की बारगाह में उन के मकबूलों के वसीले से दुआ मांगनी याहिये.

﴿10﴾ **हुमूर** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **से पहले भी हुमूर** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **के वसीले से दुआओं मांगी जाती थी**

जैसा के अल्लाह तबारक व तआला कुरआने करीम पारह 1 सूराअे बकरह आयत नं. 89 में इरमाता है :

**وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ ۗ فَكَفَعْنَا اللَّهُ عَلَى الْكٰفِرِينَ ۝**

**तर्जमा :** और ईस से पहले वोह (बनी ईसराईल) ईसी नबी के वसीले से काइरों पर दुआओं मांगते थे.

सायिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हुन्या में आने से पहले और कुरआने करीम के नाजिल होने के पहले भी यहूदी अपनी हाजत के लिये हुजुरे पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नामे पाक के वसीले से दुआओं करते थे और कामियाब होते थे और वोह ईस तरह दुआ करते थे “**अल्लाहुम्मइत्ह अलयना वन्सुरना बिन्नबिखिल उम्मी**” या'नी या रब ! हमें नबिख्ये उम्मी के सदके में (काइरों पर) इत्ह और नुस्रत अता इरमा.

ईस से साबित हुवा के अगली कौम भी हुजूर  
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के वसीले से अल्लाह पाक से दुआ मांगा करती  
 थी और वसीला जाईज है ईस लिये तो अल्लाह तआला ने उसे  
 अपनी किताब में लिंक किया. **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ**

### ﴿11﴾ वसीला अल्लाह का हुकम और सहाबा का तरीका है

अल्लाह तआला व तआला कुरआने करीम पारह 5  
 सूरअे निसा आयत नं. 65 में इरमाता है :

**وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُكَلِّمُوكَ فِيبِأَشْجَرٍ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ  
 حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيَسْلَمُوا سَلِيمًا ۝**

**तर्जमा :** और अगर वोह अपनी जानों पर जुल्म करे तो  
 अै महबूब ! वोह तुम्हारे हुजूर लाजिर हो और फिर अल्लाह से  
 (अपने गुनाहों की) मुआफी याहे और हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 उन की शफाअत इरमाअे तो उरुर अल्लाह को बहुर तौबा कबूल  
 करने वाला पाअें.

ईस आयत से मा'लूम हुवा के बारगाहे ईलाही में रसूले  
 करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का वसीला और आप की शफाअत  
 कबूलियते दुआ और सरइराजी का ठरीआ है.

सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की वफात शरीफ के बा'द  
 अेक आ'राबी रौजअे अकदस पर लाजिर हुवा और भाके पाक  
 अपने सर पर डाली और अर्ज की या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 जो आप ने इरमाया : वोह मैं ने सुना और जो आप पर नाजिल  
 हुवा उस में येह आयत भी है " **वलव अन्नहुम ईज जलमु** "  
**(आभिर तक)** बेशक ! मैं ने गुनाह किया अपनी जान पर जुल्म

किया और मैं आप के हुजूर अल्लाह से अपने गुनाहों की मुआफी के लिये हाजिर हुवा तो आप मेरे रब से मेरे गुनाह की मुआफी दिलवाएँ।

ईस पर कब्र शरीफ़ से निदा आई तेरी बज्शिश की गई  
ईस बात से हमें कुछ सिपने येह मिला के :

(1) अल्लाह तआला की बारगाह में अर्जे हाजत के लिये उस के मकबूल बन्दों का वसीला बनाना कामियाबी का जरीआ है।

(2) हम जब औलिया अल्लाह की बारगाह में जाते हैं तो हम ईसी अन्दाज में हुआ करे।

(3) वफ़ात शरीफ़ के बा'द भी "या" के लफ़्ज के साथ पुकारना जाँछ है।

(4) अल्लाह के पास बन्दे सुनते हैं और अल्लाह की अता से हमारी मदद भी करते हैं।

### ﴿12﴾ हम दुआ किस तरह करे

या अल्लाह पाक ! तेरी बारगाह में सुवाली बन कर तेरे महबूब नबी हमारे आका और मौला रउफ़ी रहीम का वसीला ले कर हाजिर हुवा हूँ।

या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْكَ وَآلِكَ وَسَلَّمَ औ हमारे आका ! आप के रब की बारगाह में आप को वसीला बना कर हुआ कर रहा हूँ। औ बुलन्द तरीन मर्तबे वाले ! आप अपने रब की बारगाह में हमारी सिफ़ारिश कीजिये हमारी शफ़ाअत कीजिये. औ ताहिरो तय्यिब रसूल ! हमारी इरियाद सुनिये और हमारी शफ़ाअत कीजिये.

या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरा कोई अमल औसा नहीं है के जिस के त्बरोसे परवर दिगारे आलम की बारगाह में हाजिर होऊँ। या मेरे आका ! मेरे पास आप की महब्बत के सिवा कुछ भी नहीं।

या अल्लाह पाक ! तेरी बारगाह में नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का जो मकामो मर्तबा है उस के तुझैल हमारे हक में उन की शफाअत कबूल इरमा कर मेरी हाजत पूरी कर. **आमीन**

(नोट : यहां जिस बारगाह में हाजिर हो उन का नाम ले कर उस के वसीले से दुआ कर सकते हैं.)

वसीला कुरआने पाक से पारह 6 अल माईदह आयत नं. 35 में अल्लाह पाक क्या हुकम इरमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ  
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

तर्जमा : औ ईमान वालो ! अल्लाह से उरो और उस की बारगाह में वसीला तलाश करो.

﴿13﴾ **सिर्फ हलाल पाओ (दुआ कबूल होगी)**

कुरआने करीम पारह 2 सूराओ बकरह आयत नं. 168 में अल्लाह तआला ईशाद इरमाता है :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ط  
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٦٨﴾

**तर्जमा :** अै लोगो ! जाओ जो कुछ जमीन में डलाल और पाकीजा है और (हराम आ कर) शैतान के कदम पर कदम न रओ. भेशक ! शैतान तुम्हारा जुला दुश्मन है.

और इरमाता है : आयत नं. 172 में

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنَّ كُنتُمْ لَآيَاتِهِ تَعْبُدُونَ ﴿١٧٢﴾

**तर्जमा :** अै इमान वालो ! हमारी दी हुई पाक चीजें जाओ और अद्लाह का अेहसान मानो अगर तुम उस की इबादत करते हो.

सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने इरमाया : जब मैं ने येह आयत (आयत नं. 168) सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सामने पढी तो डरते सा'द बिन अभी वक्कास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने भणे हो कर अर्ज किया : या रसूलद्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे डक में दुआ इरमाअे के अद्लाह तआला मुजे मुस्तज्जबुदा'वात कर दे.

जवाब में हुजूरे पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : **अै सा'द ! अपनी जुराक पाक करो मुस्तज्जबुदा'वात हो जाओगे उस जाते पाक की कसम जिस के दस्ते कुदरत में मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जान हैं आदमी अपने पेट में हराम का अेक लुकमा डालता है तो यालीस (40) दिन तक कबूलिय्यत से मडरूम हो जाता है.**

इस आयत से मा'लूम हुवा के रिज्क में पाकीजगी किस डद तक जरूरी है वोड याहे पैसा कमाने में हो या इर लुकमा खाने

મેં હો ઓર કૌમ કા હાલ બહુત ઝિયાદા બિગળા હુવા હૈ અલ્લાહ પાક તૌફીક અતા ફરમાએ.

ઔર ફરમાતા હૈ : પારહ 7 અલ માઈદહ આયત નં. 87

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْزَمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٧﴾

**તર્જમા :** ઐ ઈમાન વાલો ! હરામ ન ઠહરાઓ વોહ પાકીઝા ચીઝેં જિસે અલ્લાહ ને તુમ્હારે લિયે હલાલ કી હેં ઓર હદ સે ન બઢો કે હદ સે બઢને વાલે અલ્લાહ કો પસન્દ નહીં.

યા'ની જિસ તરહ હરામ કો છોળ દિયા જાતા હૈ હલાલ ચીઝોં કો ઉસ તરહ તર્ક ન કરો યા'ની હદ સે ન બઢો, સાબિત હુવા કે કિસી ચીઝ કો અપની મરઝી સે હલાલ યા હરામ કરના મન્અ હૈ કિસી ચીઝ કો હરામ કહને કે લિયે શરઈ દલીલ ચાહિયે. અલ્લાહ પાક ને જિસ ચીઝ કો હરામ કહા સિર્ફ વોહી હરામ હૈ જો ચીઝ હરામ કી લિસ્ટ સે બાહર હે વોહ જાઈઝ હૈ મુબાહ હૈ.

જૈસા કે અલ્લાહ તઆલા પારહ 18 સૂરએ મુઅમિનૂન આયત નં. 51 મેં ફરમાતા હૈ :

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوَا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾

**તર્જમા :** ઐ પૈગમ્બર ! પાકીઝા ચીઝેં ખાઓ ઓર અચ્છે આ'માલ કરો, કે મેં તુમ્હારે કામોં કો જાનતા હું.

#### ﴿14﴾ હરામ મત ખાઓ

અલ્લાહ તબારક વ તઆલા કુરઆને કરીમ પારહ 2 સૂરએ બકરહ આયત નં. 188 મેં ઈશાદિ ફરમાતા હૈ :

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِيَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ  
أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

**तर्जमा :** और आपस में अेक दूसरे का माल ना हक न  
पाओ और न हाकिमों के पास उन का मुकद्दमा ँस लिये  
पहुंयाओ के लोगों का माल ना जाँठतौर पर पा लो जान बुज  
कर.

ँस आयत में बातिल तौर पर किसी दूसरे का माल पाना  
हराम इरमाया गया, याहे लूट कर या छीन कर या थोरी से या  
जुअे से या रिश्वत ले कर किसी भी बातिल तरीके से ले लेने को  
हराम इरमाया गया है. आज मुआमला येह हें के ल्वाँ ल्वाँ का  
माल पाता है कोँ लेन देन कर के उबल वापस मांगता है कोँ  
माल में मिलावट करता है.

कोँ यतीमों का माल पाता है यतीमों का माल पाना  
अैसा है जैसा के आग पाना. हदीस शरीफ़ में है : रोजे क्रियामत  
यतीमों का माल पाने वाला ँस तरह उठाया जाअेगा के उन  
की कब्रों से और उन के मुँह से और उन के कानों से धूवां  
निकलता होगा के लोग उसे पहचानेगे के येह यतीमों का माल  
पाने वाला है.

और ँतना ही नहीँ हराम काम में मदद करना भी  
गुनाह में बराबर शामिल होने जैसा है या'नी जुल्म पर और  
हराम कारी पर मदद करना भी हराम है, यहां तक के हरामे कतँ  
को हलाल जानना कुँ है. जैसा के अल्लाह पाक पारह 9 सूरअे  
अन्फ़ाल आयत नं. 25 में ँशाद इरमाता है :

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

**तर्जमा :** और उस झिन्ने से डरते रहो जो हरगिळ हरगिळ तुम में से फास जालिमों ही को न पडुंयेगा और जान लो के अल्लाह का अजाब सप्त है.

अल्लाह तआला ने मोमिनों को हुकम इरमाया के अपनी हैसियत के मुताबिक बुराईयों से लोगों को रोके और गुनाह करने वाले को गुनाह से मन्अ करे, अगर उन्हों ने औसा न किया या'नी लोगों को बुराईयों से न रोका तो अजाब सब को आम होगा या'नी फताकार और गैर फताकार सब को पडुंयेगा. हदीस शरीफ में है के सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : अल्लाह तआला मफ्सूस लोगों के बुरे आ'माल पर अजाब आम नहीं करता मगर अगर लोग अपने अन्दर बुराई को देफते रहे और मन्अ करने की ताकत हते हुवे लोगों को न रोके तो अल्लाह पाक आम अजाब त्जेजता है, नेक और बद्द उस अजाब में बराबर हते हैं और बुराई को न रोकने वाला भी गुनाह में शामिल होता है और बुराई को न रोकने वाला भी गुनाह में शामिल समजा जाता है.

यहां तक के कियामत के दिन अल्लाह तआला का मुनादी निदा करेगा के जालिमों को उन के मद्दगारों के साथ हाजिर करो अल्लाह की पनाह.

अइसोस के आज कल उलमाओंने अवाम को गुनाह से रोकना बन्ध कर दिया हैं.

## 15) ने'मतों कैसे मिले ? कैसे बढे ? तौबा करने से ने'मतें बढती है

अगर बन्दा येह याहे के उसे अल्लाह की ने'मत मिले और येह के उस की दुन्या ली बेहतर हो और आभिरत ली बेहतर हो तो बन्दे को याहिये के तौबा करता रहे और येह ली है के जो ली शामिले हाल हो उस पर शुक्र करे और अपने रिश्तेदारों या'नी मां बाप, ल्माई बहन पणोसी सब के साथ सिलअे रहमी करे कतअे रहमी न करे या'नी के सम्बंध न तोणे.

हदीस शरीफ़ में है के जो रिज़्क में बढाई याहे उस को याहिये के सिलअे रहमी करे और रिश्तेदारों के हुकूक की रियायत करे जब की आज तो मुआमला येह हैं के बाप बेटे से नर्ही बोलता और बेटे ली है के दुन्या लर में सभावते करते हैं और मां बाप को महज़ूम करते हैं.

अल्लाह तबारक व तआला पारह 11 सूअे हूद आयत नं. 3 में ईशाद़ि फ़रमाता है :

وَإِنْ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ  
كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۗ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ۝

**तर्जमा :** और येह के औ लोगो ! अपने रब से मुआफ़ी मांगो और अपने गुनाहों की तौबा करो वोह तुम्हें “**मताओ उसन**” (बहुत अच्छी जिन्दगी) देगा और अक मुकरर वक्त तक इज़ीलत वाले को उस का इज़ल पहुंयाओगा.

“**मताओ उसन**” क्या है ? लम्बी उम्र, औशो आराम वाली जिन्दगी, वसीअ रिज़्क बहुत ज़ियादा और आसान और

हलाल रोजी और कसीर फ़ाअेदा येह वा'दा है हमारे रब का तो जो येह याहता हो के कसीर ने'मतें मिले वोह सिलअे रहमी करे और तौबा करे.

और एसी सूरअे हूद आयत नं. 52 में फ़रमाता है :

وَيَقُومُوا اسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِيلُكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ

**तर्जमा :** अै मेरी कौम ! अपने रब से मुआफ़ी मांगो और उस की तरफ़ रुजूअ लाओ वोह बारिश भेजेगा, तुम्हें ज़ियादा ताकतो कुव्वत देगा.

### ﴿16﴾ शुक्र करने से ने'मत बढती है

अल्लाह तबारक व तआला पारह 13 सूरअे एब्राहीम आयत नं. 7 में फ़रमाता है :

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ

**तर्जमा :** और याद करो जब तुम्हारे रब ने सुना दिया के अगर शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा और अगर ना शुकी करोगे तो सप्त अज़ाब करूंगा.

एस आयत से मा'लूम हुवा के शुक्र से ने'मतें बढती हैं बन्दा जब अल्लाह तआला की ने'मतें और उस के तरह तरह के इज़्लो करम और अेहसान को देपता हैं तो उस के शुक्र में मशगूल हो जाता है एस से उस के दिल में अल्लाह पाक की महब्बत बढती है.

## ﴿17﴾ सभ्र करने से ने'मत बढती है

अल्लाह तआला पारह 14 सूरे अ नहल आयत नं.

96/97 में इरमाता है :

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ  
بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ  
فَلَنُحْيِيَنَّاهُ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

**तर्जमा :** जो तुम्हारे पास है वोह सभ्र अत्म हो जायेगा

और जो अल्लाह तआला के पास है वोह बाकी रहेगा और हम  
उरर सभ्र करने वाले को उन का वोह सिला देंगे जो उन के सभ्र से  
अच्छे काम के काबिल होगा जो अच्छा काम करे याहे मर्द हो या  
औरत और हो मुसलमान तो उरर हम उसे “**उयातन तय्यिबा**”  
या'नी अच्छी जिन्दगी जिलायेंगे और उरर हम उन्हें नेक बढला  
देंगे जो उन के सभ्र से बेहतर काम के लाईक हो.

यहां अल्लाह पाक येह वा'दा इरमाता है के सभ्र करने  
वाले बन्दे की अदना से अदना (मा'मूली लगने वाली) नेकी पर  
भी वोह अजो सवाब दिया जायेगा जो उस की आ'ला से आ'ला  
नेकी पर पाते “**उयातन तय्यिबा**” से क्या मुराद है बा'ज उलमा  
ने इरमाया : जैसे बन्दे को दुन्या में रिउके उलाल और कनाअत  
और आभिरत में उसे जन्नत की ने'मते अता होगी उस की दुन्या  
भी बेहतर और आभिरत भी बेहतर.

### ﴿18﴾ साबिरीं का भरपूर अज

अल्लाह तबारक व तआला पारह 23 सूरे अ लुमर आयत नं. 10 में इरमाता है :

إِنَّمَا يُؤْتِي الصَّابِرِينَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

**तर्जमा :** सभ्र करने वालों को उन का सवाब भरपूर दिया जायेगा बे हिसाब.

जिन लोगों ने आइतो बला, मुसीबतो आजमाईश पर सभ्र किया और जैसे लोगों के बारे में मौलाअे काअेनात मौला अली क़ैरुल्लाह तआल व ज़हे अक़रिम इरमाते हैं : हर नेकी करने वाले की नेकी का वज़ून होगा सिवाअे सभ्र करने वाले को और उन्हें बे अन्दाजा और बे हिसाब दिया जायेगा. येह भी कडा गया के अस्लाबो मुसीबत व बला डाज़िर किये जायेंगे न उन के लिये भीज़ान काईम होगा न दइतर भोले जायेंगे उन पर अज्जो सवाब की बे हिसाब बारिश की जायेगी यहां तक के दुन्या में औशो ईशरत की जिन्द्गी गुज़ारने वाले उन्हें देख कर आरजू करेंगे के काश ! हम पर दुन्या में मुसीबतें आती तो हम भी अज्जो सवाब पाते.

### ﴿19﴾ जो अल्लाह से डरे उस के लिये ने'मत है

अल्लाह तबारक व तआला पारह 23 सूरे अ यासीन आयत नं. 11 में इरमाता है :

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ الْعَلِيمَ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ

وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۝

**तर्जमा :** जो नसीहत माने और रहमान से बे टेभे उरे (उस के लिये बप्शिश और धुल्लत का सवाब है.

और इरमाता है सूरअे रहमान आयत नं. 46 में

**وَلَيْنَ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتٍ ۖ**

**तर्जमा :** जो अपने रब के डुल्लूर भणा डोने से उरा उस के लिये दो जन्नत हैं.

और इरमाता है : पारह 29 सूरअे मुल्क आयत नं. 12 में

**إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۖ**

**तर्जमा :** भेशक ! वोड जो बे टेभे अपने रब से उरता है (उन के लिये बप्शिश और भणा सवाब है. और इरमाता है पारह

28 सूरअे तलाक में आयत नं. 2/3 ) **तर्जमा :** जो अल्लाह से उरे

अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से

रोज़ी देगा जहां से उस का गुमान ली न डोगा और जो अल्लाह

पर भरोसा करे उस के लिये वोड काई है. और इरमाता है

आयत नं. 4 में के **तर्जमा :** और जो अल्लाह से उरे अल्लाह उस के

(सारे) काम में आसानी इरमा देगा. और इरमाता है : आयत

नं. 5 में के **तर्जमा :** और जो अल्लाह से उरे अल्लाह उस की

(सारी) बुराईयां दूर कर देगा और उस को भणा सवाब देगा.

आयत नं 10 **तर्जमा :** तो अै अकल वालो ! अल्लाह से उरो.

तो अल्लाह के बन्दों अगर बप्शिश और धुल्लत याडिये

अगर दो जन्नत याडिये भणा सवाब याडिये और अगर सारे

काम में आसानी याडिये तो अल्लाह से उरते रडो अगर माल

और भेटे याडिये तो तौबा करो और उरते रडो.

आकाओे करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : ओे अपने रओ को पडयान लेता है उस का ओौइ और ओशियत ओढ जाता है और इरमाया : में तुम सओ में सओ से जियादा अल्लाह को पडयानने वाला हूं और में सओ से जियादा अल्लाह से डरने वाला हूं. और येह उम्मत की ता'लीम के लिये है.

## ﴿20﴾ माल आने पर घतराना और माल खले जाने पर रोना धोना

अकसर देओा गया के ठन्सान गरीब ओोता है तो आजिजी करने वाला नर्म दिल और मिलनसार ओोता है और पैसे आते ही तक़्बुर करने वाला घतराने वाला और दूसरों को हकीर समजने वाला बन जाता है. जैसे काइन हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ययाजाद भाई था नादारी की हालत में तवाओअ करने वाला और ओा अप्लाक था, दौलत हाथ में आते ही उस का हाल ओदल गया ओैसा ही हाल नबिय्ये करीम के ओाहिररी हयात में सा'लओा ठंने हातिब का हुवा और आओ मुसलमानों में मालदार तओे में ओहुत कम लोओ है ओे ओा अप्लाक और तवाओअ करने वाले ओे.

अल्लाह पाक इरमाता है : पारह 20 सूरओे कसस आयत नं. 76 में

إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٧٦﴾

तर्जमा : घतराव नहीँ ओेशक ! अल्लाह घतराने वाले को दोस्त नहीँ रओता या'नी पसन्द नहीँ करता.

अल्लाह तआला कुरआने पाक पारह 21 सूरओे लुकमान आयत नं. 18/19 में ईशाईद इरमाता है :

وَلَا تَصْعُرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمَسَّ فِي الْأَرْضِ مَرْحَاً إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ  
فُتْتَالٍ فَخُورٍ ۖ وَأَقْصِدْ فِي مَشِيكَ وَاعْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۖ إِنَّ أَنْكَرَ  
الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۗ

**तर्जमा :** किसी से बात करने में अपना रुप्सार (येहरा)

कज न कर (बे रुपी मत कर मुंछ मत बिगाण) और जमीन में  
धतराता मत यल. बेशक ! अल्लाह धतराने वाले या इध्र करने  
वाले को पसन्द नहीं करता और मियाना याल (दरमियानी याल)  
यल और अपनी आवाज कुछ पस्त कर (बुलन्द मत कर) बेशक !  
सब से बुरी आवाज गधे की है.

आदमी येह सोरें के हमारा रब हम से क्या याहता है ?  
रही बात माल की तो बारहा देजा गया के लोगों की डालत  
बदलती रहती है वोह अपनी मशियत से गरीब को मालदार  
और मालदार को गरीब करता रहता है ने'मतें मिलने पर जो  
आदमी शुक्र गुजार बन्दा बना रहता है उस को वोह अपने करम  
से नवाजता रहता है और जो तकब्बुर करते है उस से ने'मतें  
धीन लेता है जैसा के अल्लाह पाक कुरआने करीम पारह 27  
सूरअे हदीद आयत नं. 23 में इरमाता है :

لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ  
كُلَّ فَتْتَالٍ فَخُورٍ ۗ

**तर्जमा :** गम न भाओ उस पर जो हाथ से निकल जाओ  
और खुश न हो उस पर जो तुम को दिया गया और अल्लाह पाक  
कोई धतराने वाले बणाई मारने वाले को पसन्द नहीं करता.

याद रहे तकब्बुर और जुद नुमाई (अहसासे भरतरी) से कोई झांखेदा नहीं. अल्लाह पाक पारह 15 सूरे अे बनी ईसराईल में इरमाता है : **तर्जमा** : जमीन पर ईतराता मत यल बेशक ! तू जमीन को थीर न डालेगा और न तू बुलन्दी में पछाण जैसा डो जायेगा. **(तकब्बुर मत कर)**

येह समज लो जो अल्लाह पाक ने मुकदर किया है वोह डो कर डी रहेगा न गम करने से गई हुई थीज मिल सकती है और न इना डोने वाली थीज ईतराने के लाईक है ईस लिये गम की जगड सभ्र करो और जुशी और ईतराने की जगड पर शुक्र करो शुक्र करने से ने'मत जियादा मिलती है. डरते ईमाम जा'इर सादिक رضي الله تعالى عنه ने इरमाया : ओ इरजन्दे आदम ! किसी थीज के यले जाने पर क्युं गम करता है ? तेरा गम करना (रोना धोना) उस को तेरे पास वापस न लायेगा और किसी मौजूद थीज पर क्युं ईतराता इभ्र करता है मौत उस को तेरे हाथ से छीन लेगी.

### ﴿21﴾ माल के गुकसान

जैसा के अल्लाह तबारक व तआला पारह 30 सूरे अे तकसुर आयत नं. 1 से 5 में इरमाता है :

**الْهَكْمُ التَّكَاثُرُ لَا حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۗ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۗ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۗ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْبَاقِينَ ۗ**

**तर्जमा** : माल की जियादा तलबी (माल की लालच डवस) ने तुम्हें अल्लाह से गाड़िल कर दिया. यहां तक के तुम्हें मौत आ गई तुम ने कब्रों का मुंड देया. तुम जल्द जान जाओगे. हां हां

जल्द पता चल जायेगा अगर तुम यकीन का जानते तो माल की महल्लत न रहते.

और अल्लाह पाक पारल 30 सूरअे हुमजल आयत नं. 2 से 4 में इरमाता है :

إِلَّذَى جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۚ يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۗ كَلَّا لَيُبَدِّلَنَّا فِي  
الْحُطْمَةِ ۝

**तर्जमा :** जिस ने माल जेणा (जम्मा किया) और गिन गिन कर रखा क्या वोह येह समजता है के उस का माल उसे दुन्या में हमेशा रहेगा ? हरगिज नहीं, वोह जरूर रोंदने वाली (जहन्नम) में ईंका जायेगा.

येह उन लोगों का हाल है जो माल जम्मा करते है जकत नहीं निकालते और लक दारों का लक नहीं देते. अथवा माल वोह है जिस को राहे मौला में भर्य किया जाये अल्लाह पाक तौईक दे.

## ﴿22﴾ रिज़क का अयान

अल्लाह पर तवक्कुल: अल्लाह तआला कुरआने करीम पारल 21 सूरअे अन्कभुत आयत नं. 62 में इरमाता है :

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ  
عَلِيمٌ ۝

**तर्जमा :** अल्लाह रिज़क कुशादा (जियादा) करता है जिस के लिये याहे और तंगी करता है जिस के लिये याहे. बेशक ! अल्लाह सब कुछ जानता है.

सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : अगर तुम अल्लाह तआला पर औसा तवक्कुल करो जैसा याहिये तो वोह तुम्हें औसे रोजी देगा जैसे परिन्दों को देता है वोह सुब्ह भूके भाली पेट उठते है और शाम को सैर डो कर वापस डोते है और बेशक इस में इमान वालों के लिये निशानियां हैं.

दुन्या में रोजी जियादा डोना येड रिजाअे इलाही की दलील नहीं और औसे ही रोजी की तंगी या'नी कम डोना येड अल्लाह तआला की नाराजगी की दलील नहीं कभी वोह गुनहगार पर वुस्मत करता है और कभी वोह इरमां बरदार पर तंग करता है येड अल्लाह तआला की डिक्मत है सवाबे आभिरत पर उस को कियास करना मडज बे डिक्मत है.

### ﴿23﴾ हम पर मुसीबतें क्यूं आती हैं ? दुआओं क्यूं कबूल नहीं होती ?

येड अेक सुवाल करीब करीब सब के दिल में रहता है ? क्या वजह है के दुआओं में असर नहीं है आइये इस का जवाब हम कुरआन से ही लेते है हम देभें के अल्लाह तआला ने हमें क्या हुकम इरमाया और हमारे आ'माल इस के भिलाइ है तो हमें क्या करना याहिये हम देभे हम कहां कहां गलतियां करते हैं ? और हमें क्या करना याहिये और क्या नहीं करना याहिये ?

### गौर मुस्लिमों से हमारे मुआमलात

अल्लाह तआला व तआला कुरआने करीम पारह 2 सूरे अे अकरह आयत नं. 221 में इरमाता है :

وَلَا تَتَّخِذُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُوْمِنُوا ۖ وَلَا مَآءَ مُؤْمِنَةٍ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَكَوْا  
 اَعْجَبْتَكُمْ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُوْمِنُوا ۖ وَاعْبُدُوا مُؤْمِنًا خَيْرٌ مِّنْ  
 مُّشْرِكٍ وَكَوْا اَعْجَبْتُمْ ۖ اُولَٰئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۗ وَاللّٰهُ يَدْعُوْا اِلَى الْجَنَّةِ  
 وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝

**तर्जमा :** शिर्क वाली औरतों से निकाह न करो जब तक  
 वोह मुसलमान न हो जाअें और बेशक ! मुसलमान लोंडी  
 मुश्रिका से अच्छी है याहे वोह तुम्हें पसन्द आअे और अपनी  
 लणकियों को मुश्रिकों के निकाह में न दो जब तक वोह ईमान न  
 लाअें. बेशक ! मुसलमान गुलाम मुश्रिकों से अच्छा हैं वोह तुम्हें  
 दोलभ की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह तुम्हें जन्नत और  
 बप्शिश की तरफ बुलाता है और वोह अपनी आयतें लोगों के  
 लिये बयान करता है के कहीं वोह नसीहत मानें.

क्या इस पर हमारा अमल है ?

### ﴿24﴾ काफ़ि़रों को दोस्त न बनाओ

अल्लाह तबारक व तआला कुरआने करीम पारह 3  
 सूरअे आले ईमरान आयत नं. 28 में इरमाता है :

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ اَوْلِيَاءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ  
 فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّا اَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقٰةً ۗ وَيَحْذَرُكُمْ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۖ  
 وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝

**तर्जमा :** मुसलमान काफ़ि़रों को अपना दोस्त न बनाओ  
 मुसलमानों को छोण कर और जो अैसा करेगा तो अल्लाह से उस

का कोई वास्ता न रहा मगर येह के तुम उस से कुछ उरो और अल्लाह तुम्हें अपने गज़ब से उराता है।

येह मनाई ईतनी हद तक है के अल्लाह पाक ने यहाँ तक इरमा दिया के **काफ़िरों से दिखी दोस्ती रखने वाले का अल्लाह तआला से कोई वास्ता न रहा** काफ़िरों से दोस्ती और मलुब्बत मन्अ हैं और हराम है उन्हें अपना राजदार बनाना और मेल ज़ोल रखना नाजार्ज़ है अगर माल या ज़ान का भोड़ हो तो सिर्फ़ ज़ाहिरि भरताव ज़ार्ज़ है।

अल्लाह तआला कुरआने करीम पारह 4 सूरे अे आले ईमरान आयत नं. 118 में इरमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بَطَانَةَ مِن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ؕ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾

**तर्ज़मा :** अै ईमान वाले ! गैरों को अपना राजदार न बनाओ वोह तुम्हारी बुराई में कुछ कमी नहीं करते उन की आरजू येह है जितनी ईज़ा तुम्हें पहुंचे उन की बातों से दुश्मनी ज़ाहिर हो चुकी है और वोह जो सीनों में छुपाअे हैं वोह ईस से भी बणा है हम ने निशानियां भोल कर तुम को दिभा दी अगर तुम्हें अकल हो।

न उन से दोस्ती ज़ार्ज़ है न मलुब्बत के तअल्लुक वोह काबिले अे'तिमाद (बरोसा पात्र) है दौरे रिसालत मआब में कुछ मुसलमान रिश्तेदारी या पणोस की वज़ह से उन से सम्बंध रखते थे उस के हक में येह आयत नाज़िल हुई इरमाया गया :

पारल 6 सूरअे मारुदल आयत नं. 51 में के

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ ۚ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ  
بَعْضٍ ۗ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فإِنَّهُ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ  
الظَّالِمِينَ ۝

**तर्जमा :** अै ँमान वालो ! यहूद और नसारा को दोस्त न  
बनाओ वोड आपस में अेक दूसरे के दोस्त हैं और जो कोँ तुम में  
से उन से दोस्ती करे वोड उन में से है .

ँस आयत में कितनी ज़ियादा सप्ताँ के साथ कडा गया  
और यहां तक के जो उन से दोस्ती करे वोड उन में से है या'नी  
मुसलमान नहीं और आँ के अरब के हुकमरान जो सिर्ई नाम के  
मुसलमान है वोड उन दुश्मनाने ँस्लाम के गडरे दोस्त है और  
मुसलमानों के दुश्मन है .

आगे सूरअे मारुदल आयत नं. 57 में ँरमाया गया के

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُؤًا وَكِبَابًا مِنَ الَّذِينَ  
أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

**तर्जमा :** अै ँमान वालो ! जिनहों ने तुम्हारे दीन को  
हंसी भेल बना लिया है वोड जो तुम से पडले किताब दिये गअे  
और काँर उन में से किसी को अपना दोस्त न बनाओ और  
अगर ँमान रभते हो तो अल्लाह से डरते रहो .

﴿25﴾ **हया के बाब में**

कौम की हालत येह है के बे हयाँ आम हो युकी है बे  
पईगी मा'भूली समजा जाता है शादियों में देभा जाअे तो रोड पर

बे पढाँ औरतेँ डी.जे के साथ नायती नजर आती है पौकेँ पुढाँ निकल गया है औरतेँ को रोकने वाला कोँ नहीँ है बाप, भाँ, बेटा और शौहर तमाशा देभते है येँ बहूत बणा गुनाह है **ऐसा लगता है के मर्दाँ की अकल पर पढाँ पण गया है.**

आँमे देभे ईस मुआमले में अल्लाह पाक क्या इरमाता है और इर हम देभे हम क्या कर रहे हैं ? और जब येँ करेँगे तो अजाब नहीँ आँमे तो क्या आँमे ? हमारी बे हयाँ ने हम पर बे बरकती ला दी है.

अल्लाह पाक पारह 18 सूरेमे नूर आयत नं. 30 /31 में इरमाता है :

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَعْضُوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ذَلِكَ أَزَى لَهُمْ  
 إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝ وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَعْضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ  
 وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ  
 بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ  
 آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنَاتِ  
 إِخْوَانِهِنَّ أَوْ أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّبِيعِينَ غَيْرِ أُولَى  
 الْأَرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَى عَوْرَاتِ النِّسَاءِ ۖ وَلَا  
 يُضْرَبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ ۖ مِنْ زِينَتِهِنَّ ۖ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَا  
 الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

**तर्जमा :** मुसलमान मर्दाँ को हुकम दो के अपनी निगाहें कुछ नीची रभें और अपनी शर्मगाहों की छिड़ात करें, येँ उन के

લિયે બહુત પાક હૈ, બેશક અલ્લાહ કો ઉન કે કામોં કી ખબર હૈ ઓર મુસલમાન ઓરતોં કો હુકમ દો કે અપની નિગાહેં નીચી રખેં ઓર અપની પાકીઝગી કી હિફાઝત કરેં ઓર અપના બનાવ (મેક અપ) ન દિખાએં મગર જિતના ખુદ હી ઝાહિર હો ઓર દુપટ્ટે અપને ગિરેબાન પર ડાલે રહેં ઓર સિંગાર અપને શૌહર યા અપના બાપ ઓર શૌહરોં કે બાપ યા અપને બેટે યા શૌહરોં કે બેટે યા અપના ભાઈ યા ભતીજે યા ભાન્જે કે સિવા દૂસરોં પર ઝાહિર ન કરેં. ઓર ઝમીન પર અપને પાંવ ઝોર સે ન રખેં કે ઉન કા સિંગાર ઝાહિર હો જાએં ઓર અલ્લાહ કી તરફ તૌબા કરો એ ઈમાન વાલો ! ઈસ ઉમ્મીદ પર કે તુમ ફલાહ પાઓ.

આજ હમ ને હયા કો છોળ દિયા હૈ જબ કે હદીસ શરીફ મેં હૈ કે અઝવાજે મુતહ્હરાત મેં સે બા'ઝ ઉમ્મહાતુલ મુઅમિનીન સરકાર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી ખિદમતે અક્કસ મેં હાઝિર થી ઉસી વક્ત ઈબને ઉમ્મે મક્તૂમ આએ હુઝૂર નબિયે કરીમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ અઝવાજ કો પર્દે કા હુકમ ફરમાયા : ઉન્હોં ને અઝ ક્રિયા : હુઝૂર વોહ તો નાબીના હૈ ફરમાયા : તુમ તો નાબીના નહીં હો. ઈસ હદીસ સે સાબિત હુવા કે ઓરતોં કો ભી ના મહરમ કો દેખના યા ઉસ કે સામને હોના નાજાઈઝ હૈ જબ કે અબ તો હાલ યેહ હૈ કે શાદી બિયાહ કે મૌકઅ પર કૌમ કી ઓરતેં રોડ પર નાયતી હૈ મ્યૂઝિક કી ધૂન ચાલૂ ઓર મર્દ, ઓરત રોડ પર નાયે યેહ કહાં કા ઈસ્લામ હૈ, સમઝ નહીં આતા.

હદીસ શરીફ મેં હૈ કે અલ્લાહ તઆલા ઉસ કૌમ કી દુઆ કબૂલ નહીં ફરમાતા જિન કી ઓરતેં ઝાંઝન (પાજેબ પગ કે કડો)

पहनती है इस से समझना चाहिये के जब जेवर की आवाज हुआ के कबूल होने में मानेअ हैं तो पास औरत की आवाज और बेपर्दगी कैसी मुजुबे गजबे ँलाही होगी ? पर्दे की तरफ से बे परवाँ तबाही का सबब है.

औरतों को चाहिये के घर के अन्दर भी चलने फिरने में भी पाँव आछिस्ता रहे और बिगैर जरूरत बाजारों में ना धूमे अपने घरों में ठहरी रहे. जैसा के अल्लाह पाक पारह 22 सूरेअे अहजाब आयात नं. 32 में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अजवाजे मुतद्हरात उम्मत की माओं को हुक्म इरमाता है : **तर्जमा** : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली ज़ाहिलिय्यत की बे पर्दगी. और आगे सूरेअे अहजाब आयात नं. 59 में इरमाता है : **तर्जमा** : अै नबी ! अपनी बीबियों और साहिब जादियां और मुसलमानों की औरतों से इरमा दीजिये के अपनी यादरों का अेक छिस्सा अपने मुँह पर डाले रहे.

अल मुप्तसर बे हयाँ से बयना हम पर वाजिब है.

### ﴿26﴾ वग्न में थोरी, माल में मिलावट न करो

अल्लाह तआला ने कारोबारी मुआमले में बहुत जियादा ताकीद इरमाँ है यहाँ तक के इरमाया : आकाअे करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने के डियामत के दिन सख्ये ताजिर (बिजनेसमेन, व्यापारी) अल्लाह पाक के अर्श के साअे में होंगे, जिस दिन उस के अर्श के साअे के सिवा कोँ साया न होगी, यहाँ तक के रिज़्क के दस छिस्सों में से नव छिस्से तिज्जरत में होंगे और ज़े बन्दा हलाल रिज़्क कमाने के लिये कोशिश करे वोह ताजिर

मिस्ले शहीद हे मगर हलाल कमाई की बणी ताकीद की गई और हुराम कमाने पर काफ़ी वरिद आई है. जैसा के पारल 8 सूरेओ आ'राफ़ आयत नं. 85 में इरमाया :

وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَقْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ  
إِصْلَاحِهَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

**तर्जमा :** नाप और तोल पूरी करो और लोगों की चीज़ें घटा कर न दो या'नी लोगों के छुकूक ईमानदारी से अदा करो.

और इरमाया : सूरेओ डूद आयत नं. 84/ 85 में इरमाता

हे :

وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنِّي أُرْكُمُ بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ  
يَوْمٍ مُّحِيطٍ ۝ وَيَقُومُوا أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ  
أَشْيَاءَهُمْ

**तर्जमा :** माप और तोल में कमी न करो बेशक ! मैं तुम्हें आसूदा हलल देभता हूं और मुझे तुम पर घेर लेने वाले अज़ाब का डर है और औ मेरी कौम ! नाप और तोल ईन्साफ़ के साथ पूरी करो और लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो और जमीन में इसाद ईलाते न इ़िरो अद्लाह का दिया हुवा जो बय रहे वोह तुम्हारे लिये बेहतर है.

ईसी बाब में आगे पारल 19 सूरेओ शुअरा आयत नं.

182/183 में इरमाया :

وَرِنُوتُوا بِالْقِسْطِ الْمُسْتَقِيمِ ۝ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي  
الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

**तर्जमा :** नाप पूरा करो और घटाने वालों में न हो और सीधी तराजू से तोलो और लोगों की चीज घटा कर न दो और जमीन में इसाद न डैलाओ.

पारह 30 सूराअे मुतफ्फिनीन आयत नं. 1 से 3 में इरमाया गया :

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۗ الَّذِيْنَ اِذَا الْكُلُوْا عَلٰى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۗ وَاِذَا كَالُوْهُمْ  
اَوْ وَزَنُوْهُمْ يَّخْسِرُوْنَ ۗ

**तर्जमा :** कम तोलने वाले की भराबी है वोह के जब दूसरों से माल ले तो पूरा ले और जब औरों को माप या तोल कर के दें तो कम कर दें ऐसे लोगों की भराबी है.

वज़न में थोरी माल में मिलावट से हमारा रिज़क हराम हो जाता है तो हमें उरते रहना चाहिये.

### ﴿27﴾ सूद ખાના, હરામ ખાના

आज कौम का अेक तबका ईस हराम चीज को हलाल समज बैठा हैं सूद का अलग अलग नाम से यूज किया जाने लगा है कोई सूद को नफ़अ कहता है जैसे के आप मुजे अेक लाभ रुपिया दीजिये हम आप को हर महीने दो हजार नफ़अ देंगे या दो हजार भाडा देंगे.

आईये हम देणे ईस बाब में अल्लाह पाक क्या इरमाता है : अल्लाह पाक कुरआने करीम पारह 3 सूराअे अकरह आयत नं. 275 में इरमाता है :

الَّذِيْنَ يَّكُوْنُ الرِّبٰوًا اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَخْتَبِطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنْ  
الْمَيْسِ ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوِ ۗ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوًا

**तर्जमा :** वोह जो सूद जाते हैं कियामत के दिन न जणे लोंगे मगर जैसे जणा होता है आसेज जहा (जैसे लकवा ग्रस्त) जिसे मज्भूत (जद हवास पागल जैसा) बना दिया गया हो येह इस लिये के उन्हों ने कहा बिजनेस त्मी सूद ही है जब के कारोबार को अल्लाह ने हलाल किया जब की सूद को हराम किया.

और आगे आयत नं. 278 से 279 में इरमाया :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾  
فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ وَإِن تُبْتِغُوا فَلَکُمْ رُءُوسُ  
أَمْوَالِکُمْ ۗ لَا تَظْمِنُونَ وَلَا تَظْمِنُونَ ﴿٢٧٩﴾

**तर्जमा :** औ ईमान वालो ! अल्लाह से उरो और छोण हो वोह सूद जो बाकी रह गया हो अगर तुम मुसलमान हो और फिर अगर औसा न किया तो अल्लाह और रसूलुल्लाह से लणाई का यकीन कर लो और अगर तुम तौबा करो तो अपना अस्ल माल ले लो न तुम किसी को नुकसान पहुंचाओ और न तुम्हारा नुकसान हो.

मुस्लिम शरीफ की हदीस में है के रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सूद जाने वाले और सूदी दस्तावेज लिखने वाले और उस के गवाहों पर ला'नत भेज और इरमाया : वोह सब गुनहगार है इस बाब में कई सारी हदीसे आई हैं और बहुत वरिद आई है सब को इस छोटी सी किताब में शामिल कर सकना मुश्किन नहीं है. सूद गुनाहे कबीरा में से है और सूद लेना हराम है और सूद को हराम न मानना हलाल समजना कुर्फ है, सूद जाने से हलाल कमाई करने से और जालिस हराम कमाई से

हलाल भूराक भाना भी हराम हो जाता है इस से बचना और तौबा जरूरी है, जैसे ही रिश्त लेना देना भी हराम है. हदीस शरीफ में रिश्त लेने और देने वालों पर ला'नत आई है.

एनशोर्ट सूद का नाम नफ़अ या भाडा रफ़ लेने से सूद हलाल नहीं हो जाता. जैसे सुव्वर को बकरी कलने से सुव्वर बकरी नहीं हो जाता.

### ﴿28﴾ झकात / उशर न निकालना

कौम में मालदारों की कमी नहीं और अगर सहीह तरीके से झकात निकाली जाये तो शायद कौम में कोई मांगने वाला न रहे, मगर अफ़सोस ! हम अपने माल की झकात अदा नहीं करते या सहीह हकदारों तक नहीं पहुंचती. अक तो हमारी कौम पूरी झकात निकालती नहीं और थोणी बहुत ज़े निकलती है वोह सहीह जगह नहीं मगर पेशावर लोगों तक यली जाती है. आईये हम देभे इस बाब में अल्लाह पाक क्या फ़रमाता हैं ?

अल्लाह तआला कुरआने करीम पारह 4 सूरअे आले एमरान आयत नं. 180 में फ़रमाता है :

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنفَعَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ لَّهُمْ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخُلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ وَرِثَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ يَكْفُرُ خَيْرٌ

तर्जमा : और ज़े कन्जूसी करते हैं उस चीज़ में ज़े अल्लाह ने उन्हें अपने इज़्ज से दी है हरगिज़ वोह उसे अपने लिये अच्छा न समज़े वोह उन के लिये बुरा है अन्करीब वोह माल जिस में उन्होंने ने भुख़ल किया था वोह कियामत के दिन उन के गले

का तौक (इन्दा) लोगा और अल्लाह ही वारिस है आस्मान और जमीन का और अल्लाह तुम्हारे कामों का जबरदार है.

बुज्ज के मा'ना में कई उलमा इस तरफ़ गये हैं के **वाजिब**

**का अदा न करना बुज्ज है** बुज्ज करने वालों पर कई वरिद आई है. हदीस शरीफ़ में है के बुज्ज और बद् मुल्की (कन्जूसी और भराब स्वभाव) येह इमानदार में जम्अ नहीं हो सकती बुज्जारी शरीफ़ की हदीस है के जिस को अल्लाह पाक ने माल दिया और अगर उस ने जकात न दी तो रोज़े क्रियामत वोह माल सांप बन कर उस के गले में लपटेगा और येह कल कर उस को उंसता रहेगा के मैं तेरा माल हूं मैं तेरा भजाना हूं. अल्लाह की पनाह !

और अल्लाह तबारक व तआला कुरआने करीम पारह

10 सूराओ तौबा आयत नं. 34 /35 में इरमाता है :

وَالَّذِينَ يَكْتُمُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يَتَّقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا فَسْرَهُمْ  
بِعَذَابِ الْيَوْمِ ۗ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتَكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ  
وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ ۗ هَذَا مَا كُنْتُمْ لَا تَفْسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝

**तर्जमा :** और वोह जो जम्अ कर रખते है सोना और

चांदी और उसे अल्लाह की राह में अर्य नहीं करते उन्हें ददनाक अजाब की जुश जबररी सुनाओ, जिस दिन उस माल को जहन्नम की आग में तपाया जायेगा फिर उस से उस की पेशानियों और करवटे और पीठे दारंगे येह कलते हुअे के येह वोह हैं जो तुम ने अपने लिये जोण कर रखा था अब इस को जोण कर रखने का मजा यपो. (अल्लाह की पनाह)

क्या बन्दे को छुत्रत लेने के लिये छतना काङी नही ?

अकात न निकालने वाले या कम निकालने वाले छस पर गौर करे.

﴿29﴾ **पुढ पसन्दी** «सुपीरीयालीठी कोम्पलेक्स» **वाले**

अवाम का अेक बणा तबका छस पुश डेडमी में मुब्तला हें के डम कितने अख्ये हें डम दूसरों से अङ्गल हें येड इप्र करते रडते है डम सख्येड जाडे है डम पीरजाडे हें डम जियादा अमल करने वाले हें मैं भलीङा डूं मुजे गुनाड कोछ नुक्सान नही पडुंया सक्ते कोछ तो येड कडता है डम से गुनाड डो डी नही सक्ते.

आछये देभे अैसे लोगों को अल्लाड पाक क्या कडता है :

जैसा के अल्लाड पाक ने पारड 4 सूरअे आले छमरान आयत नं.

188 में इरमाया :

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا آتَوْا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٨٨﴾

**तर्जमा :** डरगिळ न समजना उन्हें जो अपने किये पर पुश डोते हें और याडते येड हें के भिगैर कुछ किये उन की ता'रीङ की जाअे अैसे लोगों को डरगिळ अजाभ से डूर न समजना और अैसे लोगों के लिये ददनाक अजाभ है.

कुछ लोग है के भा वुजूद नादान डोने के येड पसन्द करते हें के लोग उन्हें आदिम समजे छल्म नही डोने पर त्मी दौण कर छमामत के लिये मुसल्ले पर चढ जाते है सख्यी भोटी तकरीर करते है लोगों से अपनी जूटी ता'रीङ याडते है मैं भलीङा डूं मैं येड डूं

वोह हूं औसी बकवास करने वालों को ँस से सबक लेना याहिये, तौबा करनी याहिये.

और अल्लाह पाक कुरआने पाक पारह 27 सूरअे नज्म आयत नं. 32 में इरमाता है :

هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۗ  
فَلَا تَزُكُّوا أَنْفُسَكُمْ ۗ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَى ۚ

**तर्जमा :** वोह अल्लाह तुम्हें ખૂબ જાનતા હૈ ઉસ ને तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी मांओं के पेट में हम्ब में थे तो ખુદ आप अपनी जानों को पाक न बताओ वोह ખૂબ જાનતા હૈ જો तुम में परहेजगार हैं.

येह आयत उन लोगों के हक में नाजिल हुँ जो नेकियां करते थे और अपने आ'माल की ता'रीफ़ करते थे. जैसे हमारी नमाज़ें, हमारे रोज़ें, हमारी हज वगैरा कहा गया के अपनी नेकियों की ता'रीफ़ मत करो अल्लाह पाक अपने बन्दे के आ'माल को अच्छी तरह जानता है ँस आयत में रिया और ખुदनुमाई की मनाई इरमाई गई.

याद रहे वोह जो अल्लाह ने इरमा दिया पारह 18 सूरअे नूर आयत नं. 21 में :

وَكُلُوا فَضْلَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتَهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا ۚ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزِيكِي مِنَ يَشَاءُ ۗ

**तर्जमा :** और अगर अल्लाह का इज़्जल और उस की रहमत अगर तुम पर न छोती तो तुम में से कोई कभी सुथरा न होता.

इध्र नही शुक्र करो के तुम्हें पाकीजा किया और अगर तकब्बुर ही करना है तो अल्लाह के अजाब के लिये तय्यार हो जाओ.

### ﴿30﴾ किसी पर बोहतान लगाना

जलन और हसद बहुत बणी भीमारी है और बणे बणे कडलाते उलमा और यहां तक के दुन्यादार तो दुन्यादार मगर अपने आप को पीरे तरीकत या जलनशीन कडलाने वाले शाहजादे भी इस से बचे हुवे नजर नहीं आते. येह जूटे और ज़खिल बाबा लोग दूसरे पीरों की नीची दिभाने के लिये जूटे इल्जाम घणते हैं, बोहतान लगाते है और कुछ दुन्यादार हसद (ईर्ष्या) और जलन से अपने रिशतेदार, भाई पणोसी को गालियां देते हैं उन्हें सूद भोर, हराम भोर तक कड देते है. यहां तक के अपनी जूटी बात को मनवाने के लिये जूटी कसम भी जा लेते है. आइये ऐसे लोगों को अल्लाह पाक क्या इरमाता है ?

अल्लाह तआला कुरआने करीम पारह 5 सूरे अे निसा आयत नं. 111-112 में इरमाता है :

وَمَنْ يَلْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَلْسِبُهُ عَلَى نَفْسِهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَنْ يَلْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِي بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝

**तर्जमा :** और जो गुनाह कमाये तो उस की कमाई उसी की जलन पर पणे और अल्लाह ईल्म और छिकमत वाला है. और जो कोई गुनाह या भता कमाये और किसी बे गुनाह पर थोप दे तो उस ने ज़रर बोहतान और ખुला गुनाह उठाया.

अल्लाह पाक ने येह बात “**जो कोई गुनाह कमाये तो उस की कमाई उसी की जान पर पजे**” इस को अपने कलाम में बहुत बार इरमाया जैसा के पारह 11 सूरअे यूनुस आयत नं. 23 में इरमाया : **तर्जमा** : अै लोगो ! तुम्हारी जियादती तुम्हारे ही ज्ञानों पर वबाल है दुन्या के जते ज भरत लो फिर तुम्हें हमारी ही तरफ़ फिरना है उस वक्त हम तुम्हें बता देंगे तुम्हें पता चल जायेगा जो तुम्हारे करतूत थे. और पारह 22 सूरअे इतिर आयत नं. 43 में है : **तर्जमा** : अपनी जान को जमीन में उंया भीयना और बुरा दांउ यलना और बुरा दांउ अपने यलाने वालों पर ही पणता हैं. जैसे कडते हैं जैसी करनी वैसी भरनी या जैसे जो षडा षोदता है वोही उस में पणता है. या जैसे यूं कडो जो भलाई बोअेगा वोह गिबता काटेगा और जो बुराई बोअेगा वोह नदामत काटेगा, कर लो जो करना है आबिर नदामत है.

अल्लाह भोहतान लगाने वाले ँल्लाम तराशने वाले जूटी कसम पाने वालों को तौबा की तौईक दे.

### ﴿31﴾ वारसाई में लणकियों का हक न देना

कौम की अकसरियत देखा गया के बाप की विरासत में से लणकियों का हिस्सा ही नहीं देते भेदे आपस में बांट लेते हैं और मरने वाला भी अपनी हयाती में न तक्सीम कर के जाता है और न वसियत कर के जाता है अेक उम्र के बाद आदमी को याहिये के मरने से पहले अपने हाथ से ही अपना माल जाअेदाद तक्सीम करें या वसियत कर के मरे.

आईये देअे के अल्लाह रब्बुल ँज्जत ँस बाअ में क्या इरमाता है :

अल्लाह पाक कुरआने करीम पारह 4 सूरे अे निसा आयत नं. 7 में इरमाता है :

لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۝

**तर्जमा :** मर्दों के लिये हिस्सा है उस में से जो छोण गअे मां बाप और करीबी रिशतेदार और औरतों के लिये हिस्सा है ँस में जो छोण गअे मां बाप और रिशतेदार.

और अल्लाह पाक पारह 30 सूरे अे इश आयत नं. 17 में इरमाता है : **तर्जमा :** “बढे तुम यतीम की ँज्जत नहीं करते और आपस में अेक दूसरे को मिस्कीन के ढिलाने की रगभत नहीं देते और मीरास (वारसाँ) का माल हप हप ढाते हो और माल की निहायत महब्भत रढते हो.”

आज डालत येड हैं के हलाल व हराम में इर्क नहीं करते दौलत मन्द होने के बा वुजूद सिलअे रडमी नहीं करते वारसाँ का हक अदा नहीं करते न बहनों को देते हैं न यतीमों को देते हैं और येड माल जो दूसरों का हक दबा कर ढाया जाअे वोड ढाने वाले के लिये हराम है येड नाहक माल ढाना वोड आग ढाना है और येडी हमारे घरों में बे बरकती का और दुआओं कडूल नहीं होने का सबब हैं.

﴿32﴾ **अर्यों की ता'लीम स्कूल की पढाँ और तरबियत**

माहोल येड है के अर्या पैदा होते डी मां बाप या दादा दादी येड तय्यारी में लग जाते हैं ँस को कौन सी स्कूल में अेडमीशन दिलाया जाअे मालदार किसी कोन्वेन्ट या ँग्लिश

મીડિયમ મેં મહેંગી સ્કૂલ મેં લાગવગ લગા કર બળી રકમ કા ડોનેશન દે કર દાખિલા લેને કી કોશિશ ચાલૂ કર દેતે હૈ ઓર ગરીબ તબકા કિસી સરકારી સ્કૂલ મેં જહાં ફિસ કમ હો વહાં દાખિલ કરા દેતે હૈં કે મઝહબી તા'લીમ કી ખાસ કોઈ ફિક હી નહીં. નતીજા યેહ આતા હૈ કે બચ્ચે બળે હો કર ડોક્ટર, વકીલ, એન્જિનિયર, પ્રોફેસર તો બન જાતે હૈ મગર પૂરા મુસ્લિમ નહીં બનતે આજ દેખા જાએ તો **મુઆશરે મેં મુસલમાન તો નઝર આતા હૈ મગર ઈસ્લામ નઝર નહીં આતા.**

ઓર સરકારી સ્કૂલોં કી હાલત યેહ હૈ કે બચ્ચે ભારત માતા કી જય યા વન્દે માતરમ તો સિખતે હૈ બચ્ચા યસ સર યા યસ મેડમ કી જગહ જય શ્રી રામ સિખાયા જાતા હૈ વોહ ગણપતી તો જાનતે હૈ મગર ગૌસે આ'ઝમ કો નહીં જાનતે, વોહ ગરબે સિખતે હૈ મગર ના'તે રસૂલ નહીં સિખતે, હમારે પાસ કૌમ કે પાસ અચ્છી સ્કૂલે હોની ચાહિયે જો નહીં હૈ ઝરૂરત હૈ હમારી એસી સ્કૂલ હો જો ઈંગ્લિશ મીડિયમ મેં પઢાએ મગર સાથ મેં **લાઈલાહ ઈલ્લાહ** કા મા'ના ઓર મતલબ ભી સમઝાએ.

અલ્લાહ પાક કુરઆને કરીમ પારહ 28 સૂરએ તહરીમ આયત નં. 6 મેં ફરમાતા હૈ :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقْوُدْهَا النَّاسُ وَالْجِبَارَةُ  
عَلَيْهَا مَلِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا  
يُؤْمَرُونَ ﴿٦﴾

**તર્જમા :** ઐ ઈમાન વાલો ! અપની જાન ઓર અપને અહલો અયાલ (ઘર કે મેમ્બર્સ) કો ઉસ (જહન્નમ) કી આગ સે

बयाओ जिस का ईधन आदमी और पथर (मुर्तिया) हैं उस पर सप्त करें (ताकतवर) फिरिश्ते मुकर्रर हैं जो अद्लाह का हुक्म नहीं टालते और उन्हें जो हुक्म हो वोही करते हैं.

हमारे लिये जरूरी है के हम बच्चों को सिर्फ कलिमा न पढाओ मगर कलिमे का तर्जमा भी समजाओ सिर्फ कुरआन न पढाओ मगर उस का मा'ना और मुफ्तसर तर्फसीर भी बताओ उन्हें बताओ के कुरआन हमारे लिये Law And Order है हमारे लिये Rules And Regulation है इसे समज कर पढे. क्या हम अपनी आने वाली नस्ल को और भुद को जहन्नम से बचाने की कोशिश करेंगे ? क्या हम स्कूल कोलेज ता'भीर करेंगे ?

### ﴿33﴾ मजाराते औलिया और जादिम हजरात

आज वहाबियत गुमराहियत जो कौम में बढ रही है उस के लिये जिम्मेदार हमारे दरगाहों के जादिम और ज़खिल साहिबे सज्जादा और कुछ जूटे पीर है.

आज साहिबे सज्जादा का बेटा नाईब सज्जादा और जादिम का बेटा जादिम येह रवाज हो गया है और मजाराते औलिया जो अक जमाने में ईज पाने का जरीआ थे वोह अब गुमराही ईलाने का निशान बन गया है, ऐसी ऐसी दरगाहे है जहां डोली भेदी जाती है गुलाल और रंग की बारिश होती है जादिम हजरात यरस पीते है, गांजा पीते है. ज़ाईरीन से पैसे मांगते है और दरगाहों को दुकान बना दी गई है.

अभी अक मशहूर वलियुद्लाह का उर्स के वक्त रास्ते से गुजर हुवा स्टोल बन गओ थे कही जादू के भेल यालू थे कही डान्स पार्टी, कहीं चकडोल, भिलौने की दुकाने, पाने के स्टोल उर्स में

हजारों की भीषण और मस्जिदों में भाली ! लोग देग पकाते है नियाज तकसीम डोती है. मगर नमाज नहीं पढते.

लोग कहते हैं **गौस का दामन नहीं छोड़ेंगे ज्वाजा का दामन नहीं छोड़ेंगे**, मगर दामन पकणा ही नहीं दामन हाथ में है नहीं और बोलते हैं नहीं छोड़ूंगा और अफसोस उलमा जामोश है उन्होंने ने नहुयुन अनिल मुन्कर करना छोण दिया है क्या उन से सुवाल नहीं डोगा ?

अल्लाह तबारक व तआला कुरआने करीम पारह 9 सूरा अन्फाल आयत नं. 25 में इरमाता है :

**وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝**

**तर्जमा :** और उस फितने से डरते रहो जो डरगिज तुम में से सिर्फ जालिमों को ही नहीं पडुंयने वाला और जान लो के अल्लाह का अजाब सप्त है.

अल्लाह तबारक व तआला ने मोमिनों को हुकम दिया के अपनी ताकत त्तर लोगों को जुराईयों से रोके गुनाह करने वालों को गुनाह करने से मन्अ करे, अगर इन आलिमों पीरो जुजुर्गों ने येह काम या'नी नहुयुन अनिल मुन्कर करना छोण दिया तो वोह ल्भी गुनाह में पूरे पूरा शामिल हैं.

अबू दावूद शरीफ की हदीस में है के अगर जो शप्स किसी कौम में सरगर्मे मआसी या'नी गुनाह के काम में बढ जाने वाला डो और लोग आ वुजूद कुदरत के उन को न रोके तो अल्लाह तआला मरने से पहले उस न रोकने वाले को ल्भी अजाब में

मुभ्तला करता हैं. साभित हुवा जे कौम नहुयुन अनिल मुन्कर या'नी बुराईयो से रोकना तर्क कर देती हैं या'नी गुनाहों से नहीं रोकती तो अपने इस तर्क ईर्ज की शामत में मुभ्तलाओ अजाब होती है.

औ कौम के आलिमो पीरो मुस्तिथो ! नजर के सामने पुराफात देव कर चुप रहने वालों आप से भी रोजे कियामत सुवाल होगा ? बुराईयो से रोकते क्यूं नहीं ? क्या येह बात तो नहीं है के अगर हम सय बोलना शुद्दअ करेंगे तो हमारी दा'वते बन्ध हो जाओगी, हमारे नजराने बन्ध हो जाओगे, कवर छोटे हो जाओगे.

### «34» **बनावटी पीर मुकर्रिर और ना'त प्वां**

कौम का बेणा गर्क करने की कुछ बनावटी जाहिल पीर और शाहजादों ने ढान ली है सख्ये और अख्ये मुकर्रिर और पीर भी है लेकिन कम है और जूटों की आवाज में अख्ये दबे हुवे नजर आते हैं औसी औसी तकरीर करते हैं के घणी हुई करामते शो'बदे बाजी का बाजार गर्म नजर आता है शाहजादे कलते हैं कुलां तन्जिम को बन्ध कर दो कुलां पीर का बायकोट करो बस मेरी ही दुकान यलनी याहिये अवाम को याहिये के औसे जूटे पीरों से दूर रहे और कौम के टुकणे टुकणे करने वाले बनावटी पीरों से दूर रहे.

**यन्द नुमूने पेशे भिदमत है :**

कुछ पीरों और बाबाओं की अक मेहझिल अबी 25 डिसेम्बर 2023 को हुई उस में शाहजादे साहब के साले साहब ने तकरीर में गौसे पाक की जूटी करामत बयान इरमाई लोगों ने जूम कर ना'रे बोले और स्टेज पर कडा गया येह बयान करने वाले

कत्नी मद्रसे में नहीं गअे येह अंग्रेजी पढे हुवे है और टेपों कैसा कमाल बोलते हैं ! अगर येह वाकेई आलिम होता तो क्या होता ?

येह वोही बाबा है जिस के साथीदार में मुसलमानों के दो टुकणे किये आधे एधर आओ आधे उधर जाओ.

अत्नी अेक जुलूस में शामिल हुवा : होना जणा अब जिस बग्गी में पीर साहिब थे उस में हाथी घोणे के स्टेय्यु और राधा किशन (भगवान) की तस्वीरें पीर साहिब 4 बजे आने वाले थे पब्लिक दो क्लाक पडले इस्तिकबाल के लिये जम्अ हो गई नारे बोलते बोलते जुलूस एे बजे कियाम गाह पहुंया जोहर, असर, मगरिब की कुरबानी नमाज गाईब.

दूसरे अेक जुलूस की तस्वीरे सामने आई हाथ में तलवारे सेंकणों बाईक दो चार बणी गाणियां अेक देठ क्लाक बाजार में झिरे नमाजें गाईब ! रास्ते में से कंकर पथर ढेले उटाने वाले को अद्लाह जन्त देगा यहां रस्ता जाम ट्रांकि जाम अेम्बुलन्स भी न जा सके येह कैसा इस्लाम है ?

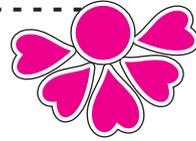
रोड ब्लोक करना इन की नजर में शानो शौकत और सवाब है, इन पर अइसोस !

ना'त ज्वां जब माईक हाथ में पकणे रात के दो बजे तीन बजे तक पढे और इज की नमाज गाईब ! शाम को चार बजे उठना येह महब्बते रसूल ?

तो येह है हमारी दुआओं कबूल न होनेकी वजह और हमारे घरों में बे बरकती होने की वजह.



# પાવરકુલ દુઆએ



મુઅલ્લિફ

હાજી ઈબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા

પ્રેસિડેન્ટ : મોહસિને આઝમ મિશન હેડ ઓફિસ

અહમદાબાદ, મો. ૯૬ ૨૪ ૨૨ ૧૨ ૧૨

પેશકશ : મોહસિને આઝમ મિશન

सूरअे बकरउ आयत नं. 201

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

र॒बना आतिना इिद-दुन्या ह-स-नतं वइल  
आभि-रति ह-स-नतं वकिना अगान-नार.

तर्मा : ओ हमारे रब ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें  
आभिरत में भी भलाई दे और हमें दोज़ाब के अगान से बचा ले.

सूरअे बकरउ आयत नं. 250

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

र॒बना अइ-रिग अलेना सभ-रव व-सठित अक-  
दा-मना वसुर-ना अ-लल कौमिल काइरीन.

तर्मा : ओ हमारे रब ! हम पर सब्र उठेले दे और  
हमारे पाउं जमाअे रब और काइर कौम पर हमारी मदद इरमा.

सूरअे बकरउ आयत नं. 286

رَبَّنَا لَا تَوَخُّدْنَا إِنَّ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إَصْرًا كَمَا  
حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ  
عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا وَإِرحَمْنَا ۚ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

र॒बना ला तुआभिग-ना घन नसीना ओ अप्तअ-  
ना र॒बना वला तह-मिल अलेना घस-रन कमा ह-मल्लहू  
अ-लल्लगी-न मिन कठिलना र॒बना वला तुहम्मिल-ना मा  
ला ता-क-त लना गिह व अ-कु अण्णा वइर लना वईम-ना  
अन-त मौलाना इंसुरना अ-लल कौमिल काइरीन.

**तर्जमा :** ओ हमारै रब ! हमें न पकण अगर हम से कोई भूल युक्त हो और ओ हमारै रब ! हम पर ऐसा भारी बोझ न रख जैसा तू ने हम से अगलों पर रखा था और हम पर वोह बोझ न डाल जिस को उठाने की हम में ताकत न हो और ओ हमारै रब ! हमें मुआफ़ कर दे और हमें बप्श दे और हम पर महेरबानी कर, तू हमारा मौला है, तू काफ़िर कौम पर हमारी मदद कर. आमीन

सूरअे आले ईमरान आयत नं. 8,9 और 16

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ  
الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ ۗ  
إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝

रब्बना ला तुज़िग कुलू-बना वअ-द धर्र हदै-तना  
व-हब लना मिल लहुन-क रह-मह, धन्न-क अन्तल वह-  
हाब. रब्बना धन्न-क जमिउन्नासि लि योमिल लारै-ब  
हीह, धन्नल्ला-ह ला युज़्लिकुल मीआद.

**तर्जमा :** ओ हमारै रब ! हमारे दिल टेढे न कर, इस के भा'द के तू ने हमें छिदायत दी और हमें अपने पास से रहमत अता कर के बेशक ! तू बणा देने वाला है. ओ हमारै रब ! बेशक ! तू सब लोगों को उस दिन के लिये जम्न करने वाला है जिस में कोई शक नहीं, बेशक ! अल्लाह का वा'दा नहीं बदलता.

رَبَّنَا إِنَّا أَمْنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

**રબબના ઇબ્નના આમબના ફરિર લના મુનૂ-બના વકિના અઝાબન નાર.**

**તર્જમા :** ઐ હમારે રબ ! હમ ઈમાન લાએ તૂ હમારે ગુનાહ મુઆફ કર દે ઓર હમ કો બખ્શ દે ઓર હમેં દોઝખ કે અઝાબ સે બચા લે. આમીન

સૂરએ આલે ઈમરાન આયત નં. 147

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَأَسْرَفَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ  
الْكَافِرِينَ ۝

**રબબનફિર લના મુનૂ-બના વ ઇસ-રાફના ફી અમ-રિના વ સબિહત અફ-દા-મના વન્સુર-ના અલલ કૌમિલ કાફિરીન.**

**તર્જમા :** ઐ હમારે રબ ! હમારે ગુનાહ ઓર હમારી ઝિયાદતિયાં જો હમ સે હુઈ વોહ મુઆફ કર દે ઓર હમેં બખ્શ દે ઓર હમારે કદમ જમા દે ઓર કાફિર લોગોં પર તૂ હમારી મદદ કર.

સૂરએ આ'રાફ આયત નં. 47

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

**રબબના લા તજ-અલના મ-અલ કૌમિઝ ઝાલિમીન.**

**તર્જમા :** ઐ હમારે રબ ! હમેં ઝાલિમોં કે સાથ ન કરના.

સૂરએ આ'રાફ આયત નં. 126

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَقَّنَا مُسْلِمِينَ ۝

**રબબના અફ-રિગા અલેના સબ-રંવ વ ત-વફ્ફના મુસ્લિમીન.**

**तर्जमा :** अै हमारै रब ! हम पर सभ्र उठेल दे और हमारी मौत मुस्लिमों के साथ कर.

**सूरअे युनूस आयत नं. 85**

**رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝**

**रब्बना ला तज-अलना फित-न-तल लिल जौमिअ ञालिमीन.**

**तर्जमा :** अै हमारै रब ! हम को ञालिम जौम के लिये आठमाईश न बना. आमीन

**सूरअे आले ईमरान आयत नं. 193-194**

**رَبَّنَا فَاعْفُرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَإِنَّا مَا وَعَدْتَنَا عَلَى رُسُلِكَ وَلَا نَحْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْوَعْدَ ۝**

**रब्बना इगिअर लना गुनू-अना वकअ-अिअ अन्ना सअिय्यातिना व तवअ-अना म-अल अअरार. रब्बना वआतिना मा वअतना अला रुसुलि-क वला तुअिअिना योमल अियामह, अन्न-क ला तुअिलकुल मीआह.**

**तर्जमा :** अै हमारै रब ! हम ने अेक मुनाही को सुना के ईमान के लिये निहा अरमाता है के अै लोगो ! अपने रब पर ईमान ले आओ तो हम ईमान ले आअे, अै हमारै रब ! तू हमारै गुनाह बअश दे और हमारी बुराईयां उतार दे और हमारी मौत अखो के साथ कर, अै हमारै रब ! हमें वोह अता कर अिस का तू ने अपने रसूलों की मा'रिअत हम को वा'दा अिया है और हम को अियामत के दिन रुस्वा न कर के बेशक ! तू वा'दा अिलाईी नही करता.

સૂરએ ઇબ્રાહીમ આયત નં. 41

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝

રબબનગિફર-લી વ-લિવાલિદે-ય વલિલ મુઅ-મિની-ન

થો-મ યકૂમુલ હિસાબ.

તર્જમા : ઐ હમારે રબ ! જિસ દિન હિસાબ કાઈમ હોગા મુઝે ઓર મેરે માં બાપ ઓર સારે મુસલમાનોં કો બખ્શ દે.

સૂરએ મુઅમિનૂન આયત નં. 118

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝

રબિગિફર વર-હમ વ-અન્ત ખૈરુર રાહિમીન.

તર્જમા : ઐ મેરે રબ ! હમેં બખ્શ દે ઓર હમ પર રહમ ફરમા ઓર તૂ સબ સે બેહતર રહમ કરને વાલા હૈ.

સૂરએ બની ઇસરાઈલ આયત નં. 80

رَبِّ ادْخُلْنِيْ مَدْخَلَ صِدْقٍ وَاَخْرِجْنِيْ مَخْرَجَ صِدْقٍ وَاَجْعَلْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا تَصِيْرًا ۝

રબિ અદ-ખિલની મુદ-ખ-લ સિદકિંવ વ-અખિર-ની

મુખ-ર-જ સિદકિંવ વજ-અલ લી મિલ લદુન-ક સુલ્તાનન નસીરા.

તર્જમા : ઐ મેરે રબ ! મુઝે સચ્ચી તરહ દાખિલ કર ઓર મુઝે સચ્ચી તરહ બાહર લે જા ઓર મુઝે અપની તરફ સે મદદગાર ગલબા અતા કર.

સૂરએ ફુરકાન આયત નં. 74

رَبَّنَاهِبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاَجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۝

र०बना ह० लना मिन अ०-वाजिना व-मुर्शियातिना

कुर्-त अअ-युनिं वज-अलना लिल मुतकी-न धमामा.

**तर्जमा :** ओ हमारै र० ! हमें हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंषों की ठंडक अता कर और हमें मुत्तकियों का पेशवा बना.

### किरिश्तों की दुआओं मोमिनों के लिये

सूरअे मुअमिन आयत नं. 8 से 9

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ  
وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ ۖ وَمَنْ تَقِ  
السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۖ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

र०बना व-अ० षिलहुम जन्नाति अ०निजिल लती व-  
अतहुम व-मन स-ल-ह मिन आ०बाघहिम व अ०वाजिहिम व  
मुर्शियातिहिम, धन्न-क अन्तल अ०गीमुल हकीम. पकि-  
हिमुस्सखियाति, व-मन तकिस्सखियाति योमघ-गिन इ-क०  
रहिम-तह, व गालिक हुवल झौमुल अगीम.

**तर्जमा :** ओ हमारै र० ! तेरी रहमत और धल्म में हर चीज समाई है, तू उन्हें बप्श दे जिन्होंने ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ाब के अजाब से बचा ले. और ओ हमारै र० ! तू उन्हें बसने के बागों जन्त में द्वापिल कर जिस का तू ने उन को वा'दा इरमाया है और उन को भी जो नेक हो उन के आप दादा और बीबियों और उन की औलाद में से, बेशक ! तू ही धज़्जत वाला डिक्मत वाला है. और उन्हें गुनाहों की शामत से बचा ले और जिसे उस दिन तू गुनाहों की शामत से

बया ले तो बेशक ! तू ने उस पर रलम इरमाया और येही बणी कामयाबी है.

सूरअे शूरा आयत नं. 5

وَالْمَلِكَةُ يُسْحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ط

वल मलाघकतु युसअिहून जि-हमि रअिहिम व-  
यस्तग-इरन लि-मन इल-अर्द.

तर्जमा : और इरिशतें अपने रब की ता'रीइ के साथ उस की पाकी बयान करते है और जमीन वालों के लिये अपने रब से मुआझी मांगते हैं.

सूरअे उशर आयत नं. 10

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا

لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَعُوفٌ رَحِيمٌ ۞

रअन-नगिर लना वलि-घप्वानि नल्लगी-न स-अ-  
कूना जिल र्मानि वला तज-अल इी कुलूजिना गिल्लल लिल  
लगी-न आ-मनू रअनना घण-क रअिकुर रहीम.

तर्जमा : अै हमारे रब ! हमें और हमारे भाईयों जे हम से पहले ईमान लाअे उन सब को बपश दे और हमारे दिल में ईमान वालों की तरइ से कीना न रअ.

सूरअे मुस्तहिना आयत नं. 4-5

رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنبَأْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۞ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ

كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۙ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۞

रुजना अले-क त-पकलना व धले-क अ-नलना व धलेकल मसीर. रुजना ला तज-अलना कितन-तल लिल लगी-न क-इइ पकिर लना रुजना, धन्न-क अन्तल अगीगुल हकीम.

**तर्जमा :** अै हमारे रब ! हम ने तुजी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रुजूअ लाये और हमें (मरने के बाद) तेरी ही तरफ़ फिरना है, अै हमारे रब ! हमें काफ़िरों की आजमा'ईश में न डाल और हमें बप्श दे, अै हमारे रब ! बेशक तू ही ईज़्जत वाला डिक्मत वाला है.

#### ﴿14﴾ रुजना

सूरअे तहरीम आयत नं. 8

رَبَّنَا آتِنَا نُورَنَا وَاعْفُرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

रुजना अल्मिम लना नू-रना पकिर लना, धन्न-क अला कुल्लि शैधन कदीर.

**तर्जमा :** अै हमारे रब ! हमारे लिये हमारा नूर पूरा कर दे और हमें बप्श दे बेशक ! तू हर चीज़ पर कादिर है.

#### दुआये हजरते आदम عليه السلام

सूरअे आ'राफ़ आयत नं. 23

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

रुजना ङ-लम्ना अन्कु-सना व-धल लम तकिर लना व-तरहम-ना ल-नकून-न मि-नल भासिरीन.

**તર્જમા :** ઐ હમારે રબ ! હમ ને અપના આપ બુરા ક્રિયા તો અગર તૂ હમેં ન બખ્શો ઓર હમ પર રહમ ન કરે તો ઝરૂર હમ નુક્સાન વાલે હુએ.

### દુઆએ હઝરતે નૂહ عليه السلام

સૂરએ કમર આયત નં. 10

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۖ فَدَعَا رَبَّهُ  
أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ۖ

કઝ-ઝ-બત કલહુમ કૌમુ નૂહિન ફ-કઝ-ઝબૂ

અબ્દના વ કાલૂ વ મજ-નૂનુંવ વઝદુજિર. ફ-દઆ રબહૂ  
અન્ની મગ્લૂબુન ફન્તસિર.

હઝરતે નૂહ عليه السلام ને અપને રબ સે દુઆ કી **તર્જમા :** ઐ મેરે રબ ! મેં મગ્લૂબ હૂં તૂ મેરા બદલા લે. ઐ મેરે અલ્લાહ ! મેરે દુશ્મનોં સે તૂ મેરા બદલા લે.

સૂરએ ઝુમર આયત નં. 37

أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝

અલેસલ્લાહુ બિ-અઝીઝિન ઝિન્તિકામ.

**તર્જમા :** ક્યા અલ્લાહ ઈઝૂઝત વાલા બદલા લેને વાલા નહીં ?

સૂરએ આલે ઈમરાન આયત નં. 4

وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝

વલ્લાહુ અઝીઝુન ઝુન્તિકામ.

**तर्जमा :** और अल्लाह पाक गालिब बटला लेने वाला है.

सूरअे जुमर आयत नं. 36

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ط

अलेसल्लाहु जि-काफिन अब्दह, व-युभल्पिकू-न-क

जिल लगी-नमिन दूनिह.

**तर्जमा :** क्या अल्लाह अपने बन्दों को काफ़ी नहीं ? कल

दो के अल्लाह मुझे काफ़ी हैं.

सूरअे नूह आयत नं. 28

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ط

وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝

रबिअिगिर्फ़ ली वलि वालिदिय-य व लिमन द-भ-ल

ऐति-य मुअ-मिनंव वलिल मुअ-मिनी-न वल-मुअ-मिनात,

वला तजिदिअ ज़ालिमी-न घल्ला तबारा.

**तर्जमा :** अै मेरे रब ! मुझे बपश दे और मेरे मां बाप को

और उन्हें बपश दे ज़े ईमान के साथ मेरे घर में है और सब

मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को और काफ़िरो को न

बढा सिवाअे तबाडी.

**दुआओ हजरते अब्राहीम عليه السلام**

सूरअे शुअरा आयत नं. 78 से 85

الَّذِي خَلَقْتَنِي فَهَوِّدْ لِي ۝ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ۝ وَإِذَا مَرِضْتُ

فَهُوَ يَشْفِينُ ۖ وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ۗ وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي  
خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ۗ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ۗ وَاجْعَلْ  
لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ۗ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۗ

અલ્લઘી ખ-લ-કની ફહુ-વ યહદીન. વલ્લઘી યુમીતુની  
સુમ-મ યુહ-યીન. વલ્લઘી અતમઉ અંચ યગ્ફિ-ર લી ખતી-  
અતી યોમદ-દીન. રબ્બિ હબ લી હુક-મંવ વ-અલ્હિક-ની  
લિસ સાલિહીન. વજ-અલ લી લિસા-ન સિદ-કિન ફિલ  
આખિરીન. વજ-અલ્ની મિંવ વ-ર-સતિ જન્નતિન નઈમ.

**તર્જમા :** વોહ જિસ ને મુઝે પૈદા ક્રિયા વોહી મુઝે રાહ દેગા  
ઔર વોહ જો મુઝે ખિલાતા ઔર પિલાતા હૈ ઔર જબ મેં બીમાર  
હોતા હૂં તો વોહી મુઝે શિક્કા દેતા હૈ ઔર વોહી મુઝે વફાત દેગા  
ઔર ફિર મુઝે ઝિન્દા કરેગા ઔર વોહી જિસ કી મુઝે આસ લગી  
હૈ કે મેરી ખતાએ ક્રિયામત કે દિન બખ્શેગા. ઐ મેરે રબ ! મુઝે  
હુકમ અતા કર ઔર મુઝે ઉન સે મિલા જો તેરે કુર્બે ખાસ કે  
સજાવાર હેં ઔર પીછલે આને વાલોં મેં મેરી સચ્ચી નામવરી રખ  
ઔર મુઝે ઉન લોગોં મેં શામિલ કર જો જન્નત કે બાગોં કે વારિસ  
હેં. (આમીન)

**સૂરએ સાફ્ફાત આયત નં. 100**

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ۞

રબ્બિ હબ-લી મિનસા-લિહી-ન.

**તર્જમા :** યા ઈલાહી ! મુઝે નેક ઔર સાલેહ ઔલાદ  
અતા કર.

## दुआये हरते या'कूब عليه السلام

(1) यानी तो अच्छा सध्र हें

सूरअे यूसुफ़ आयत नं. 86

إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

धन्नमा अश्कू बस्सी वहुम-नी ध-लल्लाहि व अथ-  
लमु मि-नल्लाहि मा ला तथ-लमून.

तर्जमा : में तो अपनी परेशानी और गम की इरियाद  
सिर्फ अल्लाह पाक ही से करता हूं और मुझे अल्लाह पाक की वोड  
शाने मा'लूम हें जे तुम नहीं जानते.

## दुआये भोमिन

सूरअे मुअमिन आयत नं. 44

وَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

व-उक़्विदु अमरी ध-लल्लाह, धन्नल्ला-ह बसीरुम  
गिल धबाद.

तर्जमा : और में अपने सारे काम अल्लाह को सोंपता हूं  
बेशक ! अल्लाह अपने बन्दों को देभता हें.

## दुआये हरते सुलेमान عليه السلام

सूरअे नमल आयत नं. 19

فَتَبَسَّمْ ضَا حَكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي  
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَخْلِفْ لِي بِرَحْمَتِكَ فِي  
عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۝

**तर्जमा :** ओ मेरे रब ! मुझे तौफ़ीक दे के मैं तेरे उस अलसान का शुक्र अदा करूं जो तू ने मुझ पर और मेरे मां बाप पर किये और मैं वोह नेक काम करूं जो तुझे पसन्द आओ और मुझे उन से मिला जो तेरे नेक बन्दे है.

**सूरअे ँध्राडीम आयत नं. 34**

وَأْتِكُمْ مِنْ كُلِّ مَأْسَلَتٍ مَبُورًا ۚ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ  
الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ۝

**व आताकुम्बिन कुल्लि मा सअल-तुमूह. व धन-तडि-  
दु निअ-मतल्लाहि ला तुह-सूहा, धन्नल धन्सान ल-अ-लूमन  
कइइर.**

**तर्जमा :** अगर तुम अल्लाह पाक की ने'मतों का शुमार करना चाओ तो नहीं कर सकते.

**दुआओ हजरते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर**

**सूरअे अलकाइ आयत नं. 15**

رَبِّ أَوْزَعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ  
صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي دِينِي ۖ إِنَّي نَبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

**रब्बि ओज्जिअ-नी अन अश्कु-र निअ-म-त-कल्लती  
अन्अम-त अ-लय-य व-अला वालिद्य-य व-अन अअ-म-ल  
सालिहन तर्दाहु व-अस्लिह ली झी मुरिअ्यती, धन्नी तुणतु  
धलै-क व धन्नी मि-नल मुस्लिमीन.**

**तर्जमा :** ओ मेरे रब ! तू मेरे दिल में उल के मैं तेरी ने'मत का शुक्र करूं जो तू ने मुझ पर और मेरे मां बाप पर की और

में वोड नेक काम कइं जे तुजे पसन्द आओ और मेरे लिये मेरी औलाद में सलाह रज में तेरी तरफ़ रुजूअ लाया और मैं मुसलमान हूँ.

### दुआओ हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام

सूरअे ताहा आयत नं. 24 से 27

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۖ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۖ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِي ۖ

रजिश्रह ली सदरी. व यस्सिर ली अमरी. पह-लुल

उक-द-तम मिल लिसानी.

**तर्जमा :** ओ मेरे रज ! मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरे (सब) काम आसान कर दे और मेरी ज़बान की गिहँ खोल दे के लोग मेरी बात समझे.

सूरअे ताहा आयत नं. 114

رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۖ

रजि जिद-नी इल्मा.

**तर्जमा :** ओ मेरे रज ! मुझे ज़ियादा इल्म दे.

सूरअे आ'राफ़ आयत नं. 151

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِإِخْوَتِي وَاخْلُفْنِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ۖ

रजिगिफ़र ली वलि-अजी व-अद-भिलना इी रह-

मति-क व-अन-त अर-हमुर राहिमीन.

**तर्जमा :** ओ हमारे रज ! मुझे और मेरे भाई को बप्श दे और हमें अपनी रहमत के अन्दर ले ले और तू सब महेर वालों से ज़ियादा महेर वाला है.

## दुआअे हउरते यूनुस عليه السلام

सूरअे अम्बिया आयत नं. 87

وَذَا النُّونِ إِذْ ذَهَبَ مَغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَنْ نَقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَى فِي الظُّلُمَاتِ  
أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

व-उनुनूनि धउर-ह-अ मगादिअन इउनुन धललनक-

दि-र अलैहि इनादा इउरुमुमाति अल्लाधला-ह धल्ला अनत  
सुअान-क, धनी कुनु मिनउरालिमीन.

तउरमा : अै अल्लाह पाक ! तेरे सिवा कोरि मा'बूद नही  
तेरे लिये पाकी है अेशक ! मुअ से अेअ दुवा.

## दुआअे सअियेदुना यूसुफ عليه السلام

सूरअे यूसुफ आयत नं. 101

فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَرَبِّي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَقَّئِي مُسْلِمًا  
وَأَحْقُقِي بِالصَّالِحِينَ ۝

इतिरस सभावाति वल अदि अन-त वलिअी इदि  
दुन्या वल आभिरह, त-वइ-इनी मुस्लिमं व-अदिहक-नी  
भिस सालिहीन.

तउरमा : अै आस्मान और उमीन के बनाने वाले ! दुन्या  
और आभिरत में तू ही मेरा काम बनाने वाला है मुजे मुसलमान  
उठा और मुजे उन से मिला अे तेरे कुर्बे आस के लाईक है.

(आमीन)

## हुमूर की दुआ उम्मतियों के लिये

सूरअे मुअमिन आयत नं. 55

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ  
وَالْإِبْكَارِ ۝

इस्तिर धन-न वय-दल्लाहि हकुं वस्तगिर्

लिगग्नि-क व-सद्विह डि-हमि रदि-क डिग अशिखि वल  
धन-कार.

**तर्जमा :** अै मडबूब ! सप्र करो बेशक ! अल्लाह क  
वा'दा सख्या है और अपनों के गुनाहों की मुआफी याहो और  
अपने रब के नाम की सुब्द शाम पाकी बयान करो.

सूरअे मुहम्मद आयत नं. 19

فَاعْلَمُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَاللَّهُ  
يَعْلَمُ مَتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ۝

इअ-लम अण्णहू ला धलाह धल्लल्लाहु वस्तग-इर

लिगग्नि-क व लिल मुअ-मिनीन वल मुअ-मिनाति. वल्लाहु

यअ-लमु मुतकल्ल-ज-कुम व मस्वाकुम.

**तर्जमा :** तो ज्ञान लो के अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी  
नहीं और अै मडबूब अपने ढासों और आम मुसलमान मर्दों  
और औरतों के गुनाहों की मुआफी मांगो और अल्लाह ज्ञानता है  
दिन को तुम्हारा इरना और रात को तुम्हारा आराम लेना.

अै अल्लाह पाक ! मैं तेरे लिये इरमा बरदार हो गया  
मेरी मशगूलियत तेरे ही साथ है और रहे मैं ने अपने सारे काम

तेरे हवाले किये मैं ने अपनी सारी छाजतों (जउरतों) में तुज ही पर त्बरोसा किया, मैं ने अपने दुश्मनों को तेरे हवाले किया, तू उन से मेरा बढला ले. औ मेरे मौला ! तू ही उन की शरारतों और मको इरेब को जानने वाला है, मौला ! मैं तो उन के सामने जईफ और कमजोर हूं, मौला ! तू उन पर ताकत और कुदरत वाला है, तेरी मज्बूक के शर और मको इरेब और झिन्तों से तू मुझे बया ले और तेरी ताकतो कुव्वत से तू मेरे दुश्मनों पर गजब नाजिल कर और मेरा बढला ले और मुझे सभ्र अता कर और मेरे मुआमले में तू मेरे दुश्मनों की मदद मत इरमा.

(आमीन या रब्बल आलमीन)

या रब ! नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके तुईल तू मेरी इस दुआ और मेरी सारी दुआओं को कबूल इरमा. आमीन. औ अल्लाह पाक ! शैतान मर्दूद के शर से मैं तेरी पनाह में आया और नइस के शर से मैं तेरी पनाह में आया, औ अल्लाह ! तेरी मज्बूक के शर से और आपसी लणाई जगणों से तू मुझे बया ले. आमीन या रब्बल आलमीन !

﴿28﴾ दुआ

औ अल्लाह पाक ! मैं तुज से सुवाल करता हूं इस लिये के तू ही मेरा मालिक, मेरा आका और मेरा मौला है तुज ही पर मेरा यकीन और तुज ही पर मेरा त्बरोसा है और तुज ही से सारी उम्मीदें है मेरी दुआ येह है के औ ईज्जत वाले रब ! औ पुदा ! ईज्जत वाले महीने और ईज्जत वाले शहर (मक्कअे मुकर्रमा और मदीनअे मुनव्वरा) और मुकदस मस्जिदे नबवी तेरे मज्बूब

नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आरामगाह के सटके तुझैल और वसीले से तू मुझे सारी भलाइयों से नवाज दे और मुझे आइतो बला और लजाई जगणे और आजमाईशो मुसीबत और सारी बुराईयों से बचा ले और शैतान के शर से और नफ्स के शर से और ज्वालिशों से बचा ले. (आमीन) नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सटके तू हमारी येह दुआ और सारी दुआओं कबूल इरमा. आमीन या रब्बल आलमीन !

### ﴿29﴾ दुआ

(1) तर्जमा : अै अल्लाह ! हमें जालिमों के इत्ने से बचा.

(2) तर्जमा : अै अल्लाह पाक ! मैं जहन्नम की आग से और काफ़िरो के शर से और जालिमों के जुल्म से तेरी पनाह में आया, ईज्जत तो बस अल्लाह और रसूल और मोमिनों के लिये ही हैं

(3) अै मेरे मौला ! हम पर कोई जाबिर, कोई जालिम, कोई जगणा जोर ईन्सान या कोई हसद करने वाले या कोई शैतान या कोई शैतानी सिफ़त वाले ईन्सान को मुसल्लत मत करना और न कोई नेक या कोई बढकार न कोई ना इरमान और न कोई तेरे भागी को मुसल्लत करना, अै अल्लाह ! तू हम को अपनी पनाह में ले ले. आमीन !

### ﴿30﴾ दुआ

अै अल्लाह पाक ! तू मुझे अपना मुहिब्ब (तुज से मडुब्बत करने वाला) और अपना मडबूब (यहीता) और अपना मुकर्रब (कुर्ब वाला), और अपना आरीफ़ (मा'रिफ़त वाला), और आशिक बना दे (आमीन या रब्बल आलमीन !)

એ અલ્લાહ ! હમેં તેરી ઓર તેરે મહબૂબીન કી મહબ્બત અતા કર ઓર દુન્યા કી મહબ્બત કો હમારે દિલ સે નિકાલ. એ અલ્લાહ પાક હમેં ઉન કી (નબિય્યે કરીમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) કી સુન્નતોં પર ઝિન્દા રખ ઓર હમેં ઉન કી મિલ્લત (ઇસ્લામ) પર મૌત દે. આમીન ઓર મુઝે શાંતિ ઓર સલામતી કે સાથ મૌત તક પહુંચા દે. આમીન.

**તર્જમા :** એ અલ્લાહ પાક ! મેરી મદદ ફરમા કે મેં તેરા ઝિક કરું ઓર તેરા શુક કરું ઓર તેરી અચ્છી ઇબાદત કરું.

(આમીન યા રબ્બલ આલમીન)

**તર્જમા :** એ અલ્લાહ મેં તેરી મહબ્બત યાહતા હું ઓર તેરે મહબૂબીન કી મહબ્બત યાહતા હું.

﴿31﴾ **શાને રસૂલુલ્લાહ** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (1)

સૂરએ બકરહ આયત નં. 127 સે 129

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣١﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمِينَ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٢﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ﴿٣٣﴾ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣٤﴾

વઘઝ યર્ફઉ ઇબ્રાહીમુલ ક્વાઇ-ઇ મિ-નલ બૈતિ વ ઇસ્માઈલ રબના ત-કબલ મિન્ના ઇન્ન-ક અન્તાસ સમીઉલ અલીમ. રબના વજ-અલના મુસ્લિમેનિ લ-ક વ મિન મુર્શિયતિના ઉમ્મતમ-મુસ્લિમ-મ-તલ લક, વ અરિના મનાસિ-

कना पतुल अलेना, धन्न-क अन्तत तप्पाजुर रहीम. रडलना  
 पल-अस झीहिम रसूलम मिन्दुम यत्तु अले-हिम आयाति-क  
 व युअल्लिमु-हुमुल किता-ल पल हि-क-म-त पयु-मककीहिम,  
 धन्न-क अन्तल अमीगुल हकीम.

**तर्जमा :** और जब उठाता था ईब्राहीम उस घर (का'बा)

की बुन्यादें और ईस्माईल ये ल कलते हुअे के अै लमारे रल ! लम  
 से कबूल इरमा के तू ली सुनने वाला और जनने वाला है. अै  
 लमारे रल ! और लम को तेरे हुजूर (ईब्राहत के लिये) गर्दन  
 रलने वाला बना और लमारी औलाद में से अेक उम्मत तेरी  
 इरमा भरदार लो और लम को तेरी ईब्राहत के काईदे लता और  
 लम पर अपनी रलमत के साथ रुजूअ इरमा के भेशक ! तू लहुत  
 तौबा कबूल करने वाला है और महेरबान है. अै लमारे रल !  
 भेज उन में अेक रसूल उन्हीं में से के उन पर तेरी आयतें  
 तिलावत इरमाअे और उन्हे तेरी किताल और पुप्ता ईल्म  
 सिपाअे और उन्हे भूष पाक इरमावे, भेशक ! तू ली गालिब  
 और हिकमत वाला है.

﴿32﴾ शाने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (2)

सूरअे अकरल आयत नं. 151

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ  
 وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿٣٢﴾

कमा अर-सलना झीकुम रसूलम मिन्दुम यत्तु अलेकुम  
 आयातिना व-युमककीकुम व-युअल्लिमु-कुमुल किता-ल पल  
 हि-क-म-त व युअल्लिमुकुम मा लम तकुनु तअ-लमून.

**तर्जमा :** जैसे हम ने तुम्हीं में से अेक रसूल तुम्हारी तरफ़ भेजा के तुम पर हमारी आयतें तिलावत करता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें क़िताब और पुज़्ता ँल्म सिखाता है और तुम्हें वोह ता'लीम इरमाता है जिस का तुम्हें ँल्म न था.

### ﴿33﴾ याद करने के लिये (3)

**तर्जमा :** भेशक ! अल्लाह का मुसलमानों पर बणा अेहसान हुवा के उन पर उन्हीं में से अेक रसूल भेजा जो उन पर उस की आयतें पढता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें क़िताब और हिकमत सिखाता है और वोह ज़रर ँस से पडले भुली गुमराही में थे.

### ﴿34﴾ शाने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (4)

**तर्जमा :** मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं, हां अल्लाह के रसूल हैं और सभ नबियों में से आभिरी हैं और अल्लाह सभ कुछ जानता हैं. औ ँमान वालो ! अल्लाह को बहुत याद करो. और सुभ शाम उस की पाकी बयान करो. वोही हैं के वोह भुद और उस के फिरिश्ते तुम पर दुरद भेजते हैं ँस लिये के तुम्हें अन्धेरियों से नूर की तरफ़ निकाले और वोह मुसलमानों पर बहुत महेरबान हैं. उन के लिये मिलने के वक्त की दुआ सलाम हैं और उन के लिये ँज़्जत का सवाब तय्यार कर रभा हैं. औ नबी ! हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर और नाज़िर और भुश भबरी सुनाता और उर सुनाता. और अल्लाह की तरफ़ उस के हुकम से बुलाता और यमका देने वाला आइताब. और ँमान वालों को भुश भबरी दो के उन के लिये अल्लाह का बणा इज़्ल हैं. (सुभ्दानल्लाह)

﴿35﴾ शाने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (5)

सूरअे इल्ड आयत नं. 9 से 10

لَتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعَزَّوْهُ وَتُقِرُّوْهُ ۖ وَتَسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً ۙ وَأَصِيْلًا ۗ إِنَّ  
الَّذِيْنَ يَبْأَيُّوْنَكَ إِنَّمَا يَبْأَيُّوْنَ اللَّهَ ۗ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيْهِمْ ۗ فَمَنْ تَكَتْ فَاتِمَّا  
يَبْتَئِكُ عَلَى نَفْسِهِ ۗ وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عٰهَدَ اللَّهُ فَيَسُوْتِيْهِ أَجْرًا عَظِيْمًا ۙ

**तर्जमा :** अै लोगो ! तुम अल्लाह और उस के रसूल पर  
ईमान लाओ और रसूल की ता'जीम और तौकीर करो और सुब्ड  
शाम अल्लाह की ખूब पाकी बयान करो. वोड जे तुम्हारी बैअत  
करते हैं वोड तो अल्लाह ही से बैअत करते हैं उन के हाथों पर  
अल्लाह ही का हाथ हैं तो जिस ने अहद तोणा उस ने अपने बणे  
अहद को तोणा और जिस ने पूरा किया वोड अहद जे उस ने  
अल्लाह से किया था तो बहुत जल्द अल्लाह उसे बणा सवाब  
देगा. (बेशक !)

## सूरअे अब्आम की तीन आयतों की इमीलत

हुजूर عَلَيْهِ السَّلَام से मरफूअन ! मरवी है जे शप्स सूरअे  
हाजा की अव्वल से तीन आयात तकसीबून तक हर सुब्ड को पढ  
लेता है, तो अल्लाह तआला उस की डिफ़ाजत के लिये सत्तर  
हजार इरिशते भेजता है और क्रियामत तक उन की ता'दाद के  
मुताबिक उस के आ'माल नामे में अज्जो सवाब लिख लिया जाता  
है और ખुसूसी तौर पर अेक इरिशता सातवें आस्मान से नाज़िल  
डोता है, उस के हाथ में अेक याबुक डोता है, जब कोई शैतान  
उस शप्स के करीब आता है, तो वोड उसे मार भगाता है इरि

उस के और शैतान के दरमियान सत्तर हजार पर्हे लटका देता है। जब क्रियामत का दिन होगा, तो अल्लाह तआला उस बन्दे से इरमाओगा, औं एंणे आदम ! आज मेरे सायओ रहमत में यलता रह और बिहिश्त से जो मर्जी आओ इल पा और डौओे कौसर से पानी पी और सल्सबील के पानी से गुस्ल कर, के तू मेरा बन्दा और मैं तेरा रह हूं, आज तेरे लिये न हिसाब न अजाब।

एस मकाम पर येह अखी तरह जेहून नशीन रहे के अछादीस में बयान कर्दा सवाब की उम्मीद पर सूरओ अन्आम की तीन आयतें पढनी याहियें, लेकिन येह यकीन नहीं करना याहिये के सिर्फ एन्हीं तीन आयतों का पढ लेना ही नजात के लिये काफी है, न इराईओ वाजिबात व मुअक्कदा और सुनन व मुस्तहब्बात पर अमल की जरूरत है और न ही मुहरिमात व मक़्ज़ात से एंजतिनाब की छाजत है।

...अल मुप्तसर...मजकूरा बाला इजाईल बुन्यादी तौर पर उन्हीं के लिये हैं, जो अस्ल ड्यूटी अदा करने में कोताही नहीं भरतते। ताहम अल्लाह तआला बहुत करीम है और नुक्ता नवाज है, वोह ओक प्यासे कुत्ते को पानी पिवा देने की वजह से सारी उम्र के गुनाहों को बप्श देता है, तो अगर अल्लाह तआला सूरओ अन्आम की पहली तीन आयतें पढने से बप्श दे, तो येह उस के इज़्लो करम और नुक्ता नवाजी से कब बईद है ?

(तर्फ़ीरे अशरफ़ी, पारह : 7, सूरओ अन्आम)

## બિસ્મિલ્લા હિરહમા નિરહીમ

અલ હમ્દુ લિલ્લાહિલ લગી ખ-લ-કસ સમાવાતિ વલ  
અર-દ વ-જ-અ-લઝ ઝુલુમાતિ વન્નૂર સુમ્મલ લગી-ન ક-ફર  
બિ-રબ્બિહિમ યઅ-દિલૂન (૧) હુવલ્લગી ખ-લ-કકુમ મિન  
તીનિન સુમ-મ કદા અ-જલા વ અ-જલુમ મુસમ્મન ઇન્દહૂ  
સુમ-મ અન્તુમ તમતરૂન (૨) વહુવલ્લાહુ ફિસ સમાવાતિ  
વફિલ અર્દ યઅ-લમુ સિર્કુમ વ-જહ-રકુમ વયઅ-લમુ મા  
તક-સિબૂન (૩)

## ઇસ કિતાબ કી છપવાને મેં

### મદદ કરને વાલોં કે નામ

મોહસિને આઝમ મિશન મોડાસા  
મોહસિને આઝમ મિશન પ્રાંતિજ  
મોહસિને આઝમ મિશન સરખેજ હાજી રફીક ભાઈ  
હાજી અબ્દુરઝ્ઝાક ભાઈ મિલન  
હાજી ઝૈનુલ આબેદીન ભાઈ વાંકાનેર  
હાજી હાફિઝ ઈલ્યાસ ભાઈ નાંદેડ  
એડવોકેટ મુશ્તાક ભાઈ ધોળકા  
હાજી નાહીદ ભાઈ અત્તરવાલા અમરેલી  
મેમણ આસિફ ડબ્બાવાલા અબુધાબી  
હાજી હારૂન વડીયાવાલા  
હાજીયાણી હમીદા બાનુ કામાણી  
હાજી મુહમ્મદ હુસૈન ભાઈ જનતા ટીન

# મિશન કા મકસદ કૌમ કી ખિદમત

અમ્નો મહબ્બત કી છાંવ મેં, ખિદમત સુખ્હો શામ કરેં,  
આઓ ! હમ સબ મિલજુલ કર , પૈગામે નબી કો આમ કરેં.

**મોહસિને આઝમ મિશન** કી જાનિબ સે ગુજરાત ઓર મુલક મેં કઈ શહર મેં ટિક્કિન સર્વિસ ચલાઈ જાતી હેં જિસ મેં સાલ ૨૦૨૩ મેં કરીબ તીન લાખ લોગોં કો ઉન કે ઘર તક ટિક્કિન પહુંચાયા ગયા. હર સાલ ગરીબ બચ્ચિયોં કી શાદી કરાઈ જાતી હેં, મિશન કી જાનિબ સે હર સાલ શરીઅત કે દાઈરે મેં રહ કર ઈજિતમાઈ કુરબાની હોતી હે, અગર આપ ચાહો તો કૌમ ઓર દીન ઓર સુન્નિયત કે કામ મેં હમારી મદદ કર કે નેકી કે કામ મેં શામિલ હો સકતે હો, આપ અપની ઝકાત યા લિલ્લાહ રકમ દે કર ઓર અપને મહૂમીન કે ઈસાલે સવાબ કે લિયે કુછ રકમ દે કર હમારી મદદ કર સકતે હો.



**-: મિલને કા પતા :-**

મક્તબએ શૈખુલ ઈસ્લામ, અલિફ કિરાના કે સામને,

રસૂલાબાદ, શાહે આલમ અહમદાબાદ-૩૮૦૦૨૮

ઓર મોહસિને આઝમ મિશન કી તમામ બ્રાન્ચેં

કોન્ટેક્ટ : 96 24 22 12 12